bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org संवत 2081 युगाब्द 5126 कुल पृष्ठ –32 जून द्वितीय 2024, वर्ष – 34, अंक – 22

वर्तमान कमल ज्योति

₹20

25 जून, 1975
लोकतंत्र का

आपातकाल
(काला दिवस 25 जून 1975)

गरीब और वंचित कल्याण
बना प्रथम
आपातकाल
(काला दिवस 25 जून 1975)

आपातकाल
(काला दिवस 25 जून 1975)

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध/कार्यकारी सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय

कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक
नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
bjpkamaljyoti
@bjpkamaljyoti

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्!

सम्पादकीय

एक पेड़ माँ के नाम

"**वसुधैव कुटुम्बकम्**'' की भाव भावना में पंच महाभूतो का संरक्षण संवर्धन मानवीय कर्तव्य है। आज वैश्विक चुनौतियों में जन-जल-जमीन-जंगल-जानवर की सुरक्षा, संरक्षण हमारा नैतिक दायित्व हैं। इसी संदर्भ में विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुद्ध जयंती पार्क, नई दिल्ली में पीपल का पौधा लगाकर '**एक पेड़ माँ के नाम**' अभियान की शुभारम्भ करते हुए कहा कि प्रकृति के पोषण के लिए धरती माता और मानव जीवन के लिए हमारी माताओं के बीच समानता दर्शाते हैं। मोदी ने दुनिया भर के लोगों से अपनी माँ के प्रति प्रेम, आदर और सम्मान के प्रतीक के रूप में एक पेड़ लगाने और धरती माता की रक्षा करने का संकल्प लेने का आह्वान किया।

केंद्र और राज्य सरकार के विभाग भी 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के लिए सार्वजनिक स्थानों की का वृक्ष लगायेंगे। इस बार विश्व पर्यावरण दिवस की थीम भूमि क्षरण को रोकना और उलटना, सूखे से निपटने की क्षमता विकसित करना और मरुस्थलीकरण को रोकना का मुख्य उद्देश्य है।

एक पेड़ माँ के नाम अभियान के साथ इस साल सितंबर तक 80 करोड़ और मार्च, 2025 तक 140 करोड़ पेड़ लगाने की योजना बनाई गई है। इसके लिए "संपूर्ण सरकार" और "संपूर्ण समाज" नीति का पालन किया जाएगा। ये पेड़ पूरे देश में व्यक्तियों, संस्थाओं, समुदाय आधारित संगठनों, केंद्र और राज्य सरकार के विभागों और स्थानीय निकायों द्वारा लगाए जाएंगे।

भारत सरकार के स्कूल शिक्षा विभाग ने एक पेड़ माँ के नाम के संदेश को आगे बढ़ाने के लिए 7.5 लाख स्कूलों में इको क्लब को प्रेरित किया है।

आज पूरी दुनिया में शुद्ध ऑक्सीजन का संकट खड़ा है, जिसका उदाहरण "करोना'' का समय रहा जहाँ आक्सीजन सिलेन्डर के लिए हम भटकते रहे।

आज धरती माता को अगर बचाना है तो हर व्यक्ति यदि एक पेड़ का रोपड़ पालन पोशण करें तो दुनिया की प्राकृतिक चुनौती कम होगी। आज आवश्यकता है मातृ षक्ति के सम्मान में हम एक वृक्ष का रोपण पोषण करें।

bjpkamaljyoti@gmail.com

स्वर्णिम भारत का स्वराज्य पथ

18वीं लोकसभा के सत्तारम्भ में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने इस सदन को सम्बोधित करते हुए कहा कि– नए संसद भवन में यह मेरा पहला संबोधन है। आज़ादी के अमृतकाल की शुरुआत में यह भव्य भवन बना है। यहां एक भारत श्रेष्ठ भारत की महक भी है। भारत की सभ्यता और संस्कृति की चेतना भी है। इसमें, हमारी लोकतांत्रिक और संसदीय परंपराओं के सम्मान का प्रण भी है। साथ ही, 21वीं सदी के नए भारत के लिए, नई परंपराओं के निर्माण का संकल्प भी है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस नए भवन में नीतियों पर सार्थक संवाद होगा। ऐसी नीतियां जो आज़ादी के अमृतकाल में विकसित भारत का निर्माण करेंगी।

मैं आप सभी को अपनी शुभकामनाएं देती हूं।

यह हमारे संविधान के लागू होने का भी 75वां वर्ष है। इसी कालखंड में आज़ादी के 75 वर्ष का उत्सव, अमृत महोत्सव भी संपन्न हुआ है। इस दौरान देश भर में अनेक कार्यक्रम हुए। देश ने अपने गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों को याद किया। 75 साल बाद युवा पीढ़ी ने फिर स्वतन्त्रता संग्राम के उस कालखंड को जिया।

इस उत्सव के दौरानः मेरी माटी, मेरा देश अभियान के तहत, देश भर के हर गाँव की मिट्टी के साथ अमृत कलश दिल्ली लाए गए।

2 लाख से ज्यादा शिला–फलकम स्थापित किए गए।

3 करोड़ से ज्यादा लोगों ने पंच प्राण की शपथ ली।

70 हजार से ज्यादा अमृत सरोवर बने।

2 लाख से ज्यादा अमृत वाटिकाओं का निर्माण हुआ।

2 करोड़ से ज्यादा पेड़–पौधे लगाए गए।

16 करोड़ से ज्यादा लोगों ने तिरंगे के साथ सेल्फी अपलोड की।

अमृत महोत्सव के दौरान हीः कर्तव्य पथ पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा स्थापित की गई। राजधानी दिल्ली में देश के अब तक के सभी प्रधानमंत्रियों को समर्पित म्यूजियम खोला गया। शांति निकेतन और होयसला मंदिर वर्ल्ड हेरिटेज लिस्ट में शामिल हुए। साहिबज़ादों की याद में वीर बाल दिवस घोषित हुआ। भगवान बिरसा मुंडा के जन्म दिवस को जनजातीय गौरव दिवस घोषित किया गया। विभाजन की विभीषिका को याद करते हुए, 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस घोषित किया गया।

बीता वर्ष भारत के लिए ऐतिहासिक उपलब्धियों से भरा रहा है। इस दौरान देशवासियों का गौरव बढ़ाने वाले अनेक पल आए। दुनिया में गंभीर संकटों के बीच भारत सबसे तेज़ी से विकसित होती बड़ी अर्थव्यवस्था बना। लगातार 2 क्वार्टर में भारत की विकास दर 7.5 प्रतिशत से ऊपर रही है।

भारत, चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव पर झंडा फहराने वाला पहला देश बना। भारत ने सफलता के साथ आदित्य मिशन लॉन्च किया, धरती से 15 लाख किलोमीटर दूर अपनी सैटेलाइट पहुंचाई। ऐतिहासिक G–20 सम्मेलन की सफलता ने पूरे विश्व में भारत की भूमिका को सशक्त किया। भारत ने एशियाई खेलों में पहली बार 100 से अधिक मेडल जीते। पैरा एशियाई खेलों में भी 100 से अधिक मेडल जीते। भारत को अपना सबसे बड़ा समुद्री–पुल, अटल सेतु मिला। भारत को अपनी पहली नमो भारत ट्रेन तथा पहली अमृत भारत ट्रेन मिली।

भारत, दुनिया में सबसे तेज़ी से 5G रोलआउट करने वाला देश बना। भारतीय एयरलाइंस कंपनी ने दुनिया की सबसे

बड़ी एयरक्राफ्ट डील की। पिछले साल भी, मेरी सरकार ने, मिशन मोड में, लाखों युवाओं को सरकारी नौकरी दी है।

बीते 12 महीनों में मेरी सरकार अनेक महत्वपूर्ण विधेयक लेकर भी आई। ये विधेयक, आप सभी संसद सदस्यों के सहयोग से आज कानून बन चुके हैं। ये ऐसे कानून हैं जो विकसित भारत के संकल्प की सिद्धि का मजबूत आधार हैं। 3 दशक बाद, नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित करने के लिए मैं आपकी सराहना करती हूं। इससे लोकसभा और विधानसभा में महिलाओं की ज्यादा भागीदारी सुनिश्चित हुई है। यह वीमेन लेड डेवलपमेंट के मेरी सरकार के संकल्प को मजबूत करता है। रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म के अपने कमिटमेंट को मेरी सरकार ने लगातार जारी रखा है।

गुलामी के कालखंड से प्रेरित क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम अब इतिहास हो गया है। अब दंड को नहीं, अपितु न्याय को प्राथमिकता है।'न्याय सर्वोपरि' के सिद्धांत पर नई न्याय संहिता देश को मिली है। डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन अधिनियम से डिजिटल स्पेस और सुरक्षित होने वाला है। अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन अधिनियम से देश में रिसर्च और इनोवेशन को बल मिलेगा। जम्मू और कश्मीर आरक्षण कानून से, वहां भी जनजातीय समुदायों को प्रतिनिधित्व का अधिकार मिलेगा। इस दौरान सेंट्रल यूनिवर्सिटी कानून में भी संशोधन किया गया। इससे तेलंगाना में समक्का सरक्का सेंट्रल ट्राइबल यूनिवर्सिटी बनाने का रास्ता सुगम हुआ। पिछले वर्ष 76 अन्य पुराने कानूनों को भी हटाया गया है। मेरी सरकार परीक्षाओं में होने वाली गड़बड़ी को लेकर युवाओं की चिंता से अवगत है। इसलिए ऐसे गलत तरीकों पर सख्ती के लिए नया कानून बनाने का निर्णय लिया गया है।

कोई भी राष्ट्र, तेज गति से तभी आगे बढ़ सकता है, जब वह पुरानी चुनौतियों को परास्त करते हुए अपनी ज्यादा से ज्यादा ऊर्जा भविष्य– निर्माण में लगाए। पिछले 10 वर्षों में, भारत ने राष्ट्र–हित में ऐसे अनेक कार्यों को पूरा होते हुए देखा है जिनका इंतजार देश के लोगों को दशकों से था। राम मंदिर के निर्माण की आकांक्षा सदियों से थी। आज यह सच हो चुका है। जम्मू कश्मीर से आर्टिकल–370 हटाने को लेकर शंकाएं थीं। आज वे इतिहास हो चुकी हैं। इसी संसद ने तीन तलाक के विरुद्ध कड़ा कानून बनाया। इसी संसद ने हमारे पड़ोसी देशों से आए पीड़ित अल्पसंख्यकों को नागरिकता देने वाला कानून बनाया। मेरी सरकार ने वन रैंक वन पेंशन को भी लागू किया, जिसका इंतजार चार दशकों से था। व्व्छ लागू होने के बाद अब तक पूर्व सैनिकों को लगभग 1 लाख करोड़ रुपए मिल चुके हैं। भारतीय सेना में पहली बार चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ की नियुक्ति भी हुई है।

उत्कलमणि पंडित गोपबंधु दास की अमर पंक्तियां असीम राष्ट्र प्रेम की भावना का सदा संचार करती हैं। उन्होंने कहा था:

मिशु मोर देह ए देश माटिरे,
देशबासी चालि जाआन्तु पिठिरे।
देशर स्वराज्य–पथे जेते गाड़,
पूरु तहिं पड़ि मोर मांस हाड़।

अर्थात् मेरा शरीर इस देश की माटी के साथ मिल जाए,
देशवासी मेरी पीठ पर से चलते चले जाएं,
देश के स्वराज्य–पथ में जितनी भी खाइयां हैं,
वे मेरे हाड़–मांस से पट जाएं।

इन पंक्तियों में हमें कर्तव्य की पराकाष्ठा दिखती है, 'राष्ट्र सर्वोपरि' का आदर्श दिखाई देता है।

ये उपलब्धियां जो आज दिख रही हैं, वे बीते 10 वर्षों की साधना का विस्तार हैं। हम सभी बचपन से गरीबी हटाओ के नारे सुनते आ रहे थे। अब हम जीवन में पहली बार बड़े पैमाने पर गरीबी को दूर होते देख रहे हैं।

नीति आयोग के अनुसार, मेरी सरकार के एक दशक के कार्यकाल में, करीब 25 करोड़ देशवासी गरीबी से बाहर निकले हैं। यह प्रत्येक गरीब में नया विश्वास जगाने वाली बात है। जब 25 करोड़ लोगों की गरीबी दूर हो सकती है तो उसकी भी गरीबी दूर हो सकती है।

आज अर्थव्यवस्था के विभिन्न आयामों को देखें तो यह विश्वास बढ़ता है कि भारत सही दिशा में है तथा सही निर्णय लेते हुए आगे बढ़ रहा है।

बीते 10 वर्षों में हमने भारत को फ्रैजाइल फाइव से निकलकर, टॉप फाइव इकॉनॉमीज़ में शामिल होते देखा है। भारत का निर्यात, करीब 450 बिलियन डॉलर से बढ़कर 775 बिलियन डॉलर से अधिक हो गया है। पहले की

तुलना में FDI दोगुना हुआ है। खादी और ग्रामोद्योग के उत्पादों की बिक्री में 4 गुना से अधिक की वृद्धि हुई है।

ITR फाइल करने वालों की संख्या, करीब सवा 3 करोड़ से बढ़कर लगभग सवा 8 करोड़ हो चुकी है; यह बढ़ोतरी, दो गुना से भी कहीं अधिक है।

एक दशक पहले देश में केवल कुछ सौ स्टार्ट–अप थे जो आज बढ़कर 1 लाख से अधिक हो गए हैं। साल में 94 हज़ार कंपनियां रजिस्टर हुईं थीं। पिछले वर्ष, यह संख्या 1 लाख 60 हज़ार तक पहुंच चुकी है। दिसंबर 2017 में, 98 लाख लोग GST देते थे, आज इनकी संख्या 1 करोड़ 40 लाख है। 2014 से पहले के 10 वर्षों में, लगभग 13 करोड़ वाहन बिके थे। पिछले 10 वर्षों में, देशवासियों ने 21 करोड़ से अधिक वाहन खरीदे हैं। 2014–15 में, लगभग 2 हज़ार इलेक्ट्रिक वाहन बिके थे। जबकि 2023–24 में दिसंबर माह तक ही लगभग 12 लाख इलेक्ट्रिक वाहन बिक चुके हैं।

बीते दशक में, मेरी सरकार ने सुशासन और पारदर्शिता को हर व्यवस्था का मुख्य आधार बनाया है। इसी का परिणाम है कि हम बड़े आर्थिक सुधारों के साक्षी बने हैं। इस दौरान देश को Insolvency and Bankruptcy Code मिला है। देश को GST के रूप में एक देश एक टैक्स कानून मिला है। मेरी सरकार ने मैक्रो इकनॉमिक स्टेबिलिटी भी सुनिश्चित की है। 10 वर्षों में, कैपेक्स 5 गुना बढ़कर 10 लाख करोड़ हो गया है। साथ ही, फिस्कल डेफिसिट भी नियंत्रण में है। आज हमारे फोरेक्स रिज़र्व 600 अरब डॉलर से ज्यादा हैं। हमारा बैंकिंग सिस्टम जो पहले बुरी तरह से चरमराया था, वह आज दुनिया के सबसे मजबूत बैंकिंग सिस्टम में से एक बना है।

बैंकों का NPA जो कभी डबल डिजिट में होता था, वह आज लगभग 4 प्रतिशत ही है।

मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत अभियान हमारी ताकत बन चुके हैं। भारत आज दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल फोन निर्माता देश है। पिछले एक दशक के दौरान मोबाइल फोन मैन्युफैक्चरिंग में 5 गुना बढ़ोतरी हुई है। कुछ साल पहले भारत खिलौने आयात करता था, आज मेड इन इंडिया खिलौने निर्यात कर रहा है।

भारत का डिफेंस प्रोडक्शन एक लाख करोड़ रुपए के पार पहुंच चुका है। आज हर भारतीय, देश में बने एयरक्राफ्ट करियर INS विक्रांत को देखकर, गर्व से भरा हुआ है। लड़ाकू विमान तेजस अब हमारी वायुसेना की ताकत बन रहे हैं। C–295 ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट का निर्माण भारत में होने जा रहा है। आधुनिक एयरक्राफ्ट इंजन भी भारत में बनाया जाएगा। उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु में डिफेन्स कॉरिडोर का विकास हो रहा है।

मेरी सरकार ने डिफेंस सेक्टर में निजी क्षेत्र की भागीदारी सुनिश्चित की है। स्पेस सेक्टर को भी हमारी सरकार ने युवा स्टार्ट–अप्स के लिए खोल दिया है।

मेरी सरकार, वेल्थ क्रिएटर्स का सम्मान करती है तथा भारत के प्राइवेट सेक्टर के सामर्थ्य पर विश्वास करती है।

भारत में बिजनेस करना आसान हो, इसके लिए उपयुक्त माहौल रहे, इस पर भी मेरी सरकार लगातार काम कर रही है। Ease of Doing Business में लगातार सुधार हो रहा है। बीते कुछ वर्षों में 40 हजार से ज्यादा compliances हटाए या सरल किये गए।

Companies Act तथा Limited Liability Partnership Act में 63 प्रावधानों को अपराध की सूची से बाहर किया गया। जन विश्वास अधिनियम द्वारा 183 प्रावधानों को अपराध की श्रेणी से बाहर किया गया। अदालत के बाहर विवादों के सौहार्दपूर्ण समाधान हेतु, मध्यस्थता पर कानून बनाया गया है। वन और पर्यावरण विभाग से क्लीयरेंस मिलने में जहां 600 दिन लगते थे, वहीं आज 75 दिन से भी कम समय लगता है। फेसलेस असेसमेंट योजना से टैक्स व्यवस्था में और पारदर्शिता आई है।

हमारे MSME सेक्टर को भी, रिफॉर्म्स का बहुत अधिक लाभ हो रहा है। आप अवगत हैं कि हमारे MSMEs में आज करोड़ों देशवासी काम कर रहे हैं। MSMEs और लघु उद्यमियों को सशक्त करने के लिए मेरी सरकार पूरी प्रतिबद्धता से काम कर रही है। MSME की परिभाषा का विस्तार किया गया है। नई परिभाषाओं में, निवेश और turnover को समाहित किया गया है। आज उद्यम और उद्यम असिस्ट पोर्टल पर लगभग साढ़े 3 करोड़ MSME रजिस्टर्ड हैं। बीते वर्षों में, MSMEs के लिए क्रेडिट गारंटी स्कीम के तहत करीब 5 लाख करोड़ की गारंटी स्वीकृत की गई है। यह 2014 से पहले के दशक से, 6 गुना अधिक है।

मेरी सरकार का एक और बड़ा रिफॉर्म, डिजिटल इंडिया का निर्माण है। डिजिटल इंडिया ने भारत में जीवन और बिजनेस, दोनों को बहुत आसान बना दिया है।

आज पूरी दुनिया मानती है कि यह भारत की बहुत बड़ी उपलब्धि है। विकसित देशों में भी भारत जैसा डिजिटल सिस्टम नहीं है। गांवों में भी सामान्य खरीद–बिक्री डिजिटल तरीके से होगी, यह कुछ लोगों की कल्पना से भी परे था। आज दुनिया के कुल रियल टाइम डिजिटल लेनदेन का 46 प्रतिशत भारत में होता है।

पिछले महीने UPI से रिकॉर्ड 1200 करोड़ ट्रांजेक्शन हुए हैं। इसके तहत 18 लाख करोड़ रुपए का रिकॉर्ड लेनदेन

हुआ है। दुनिया के दूसरे देश भी आज UPI से ट्रांजेक्शन की सुविधा दे रहे हैं। डिजिटल इंडिया के कारण बैंकिंग आसान हुई है और लोन देना भी सरल हुआ है। जनधन आधार मोबाइल (JAM) की त्रिशक्ति से भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने में मदद मिली है। मेरी सरकार अब तक 34 लाख करोड़ रुपए डीबीटी से ट्रांसफर कर चुकी है।

जनधन आधार मोबाइल (JAM) के कारण करीब 10 करोड़ फर्जी लाभार्थी सिस्टम से बाहर किए गए हैं। इससे पौने 3 लाख करोड़ रुपए गलत हाथों में जाने से बचे हैं।

डिजिलॉकर की सुविधा भी जीवन को आसान बना रही है। इसमें अभी तक यूजर्स के 6 बिलियन से ज्यादा डॉक्यूमेंट्स जारी हुए हैं। आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट के तहत लगभग 53 करोड़ लोगों की डिजिटल हेल्थ आईडी बन चुकी है।

डिजिटल के साथ–साथ फिजिकल इंफ्रास्ट्रक्चर पर भी रिकॉर्ड निवेश हुआ है। आज भारत में ऐसा इंफ्रास्ट्रक्चर बन रहा है, जिसका सपना हर भारतीय देखता था। पिछले 10 वर्षों के दौरान गांवों में पौने 4 लाख किलोमीटर नई सड़कें बनीं हैं। नेशनल हाईवे की लंबाई, 90 हजार किलोमीटर से बढ़कर 1 लाख 46 हजार किलोमीटर हुई है। फोर–लेन नेशनल हाइवे की लंबाई ढाई गुना बढ़ी है। हाई–स्पीड कॉरिडोर की लंबाई 500 किलोमीटर थी, जो आज 4 हजार किलोमीटर है। एयरपोर्ट्स की संख्या 74 से दो गुना बढ़कर 149 हो चुकी है। देश के बड़े बंदरगाहों पर cargo handling capacity दोगुनी हो गई है। ब्रॉडबैंड इस्तेमाल करने वालों की संख्या में 14 गुना बढ़ोतरी हुई है। देश की लगभग 2 लाख गांव पंचायतों को ऑप्टिकल फाइबर से जोड़ा जा चुका है। 4 लाख से अधिक कॉमन सर्विस सेंटर्स भी खुले हैं जो रोजगार का बड़ा माध्यम बने हैं। देश में 10 हजार किलोमीटर गैस पाइपलाइन भी बिछाई गई है। वन नेशन, वन पावर ग्रिड से, बिजली की व्यवस्था में सुधार हुआ है। वन नेशन, वन गैस ग्रिड से, गैस आधारित अर्थव्यवस्था को बल मिल रहा है। सिर्फ 5 शहरों तक सीमित मेट्रो की सुविधा आज 20 शहरों में है। 25 हजार किलोमीटर से ज्यादा रेलवे ट्रैक बिछाए गए। यह कई विकसित देशों के कुल रेलवे ट्रैक की लंबाई से ज्यादा है। भारत, रेलवे के शत–प्रतिशत बिजलीकरण के बहुत निकट है। इस दौरान भारत में पहली बार सेमी हाई स्पीड ट्रेन शुरु हुई हैं। आज 39 से ज्यादा रूट्स पर वंदे भारत ट्रेनें चल रही हैं। अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत 1300 से ज्यादा रेलवे स्टेशनों का कायाकल्प हो रहा है। मेरी सरकार मानती है कि विकसित भारत की भव्य इमारत 4 मज़बूत स्तंभों पर खड़ी होगी। ये स्तंभ हैं – युवाशक्ति, नारीशक्ति, किसान और गरीब। देश के हर हिस्से, हर समाज में इन सभी की स्थिति और सपने एक जैसे ही हैं। इसलिए इन 4 स्तंभों को सशक्त करने के लिए मेरी सरकार निरंतर काम कर रही है।

मेरी सरकार का एक और बड़ा रिफॉर्म, डिजिटल इंडिया का निर्माण है। डिजिटल इंडिया ने भारत में जीवन और बिजनेस, दोनों को बहुत आसान बना दिया है।

मेरी सरकार ने टैक्स का बहुत बड़ा हिस्सा इन स्तंभों को मजबूत बनाने पर खर्च किया है। 4 करोड़ 10 लाख गरीब परिवारों को अपना पक्का घर मिला। इस पर लगभग 6 लाख करोड़ रुपये खर्च किये गए। लगभग 11 करोड़ ग्रामीण परिवारों तक पहली बार पाइप से पानी पहुंचा है।

मेरी सरकार का प्रयास है कि हर योजना का तेज़ी से सैचुरेशन हो। कोई भी लाभार्थी वंचित न रहे। इसके लिए 15 नवंबर से विकसित भारत संकल्प यात्रा चल रही है। अभी तक इस यात्रा से करीब 19 करोड़ देशवासी जुड़ चुके हैं।

बीते वर्षों में विश्व ने दो बड़े युद्ध देखे और कोरोना जैसी वैश्विक महामारी का सामना किया। ऐसे वैश्विक संकटों के बावजूद मेरी सरकार ने देश में महंगाई को काबू में रखा, सामान्य भारतीय का बोझ नहीं बढ़ने दिया। 2014 से पहले के 10 वर्षों में औसत महंगाई दर 8 प्रतिशत से अधिक थी। पिछले दशक में औसत महंगाई दर 5 प्रतिशत रही। मेरी सरकार का प्रयास रहा है कि सामान्य देशवासी की जेब में अधिक से अधिक बचत कैसे हो। पहले भारत में 2 लाख रुपए की आय पर टैक्स लग जाता था। आज भारत में 7 लाख रुपए तक की आय पर भी टैक्स नहीं लगता। टैक्स छूट और रिफॉर्म्स के कारण भारत के टैक्सपेयर्स को 10 साल में करीब ढाई लाख करोड़ रुपए की बचत हुई है।

आयुष्मान योजना के अलावा भी केंद्र सरकार, विभिन्न अस्पतालों में मुफ्त इलाज की सुविधा देती है। इससे देश के नागरिकों के साढ़े तीन लाख करोड़ रुपए खर्च होने से बचे हैं। जन–औषधि केंद्रों की वजह से मरीजों के करीब 28 हजार करोड़ रुपए खर्च होने से बचे हैं। कोरोनोरी स्टेंट, घुटने के इंप्लांट तथा कैंसर की दवाओं की कीमत भी कम की गई है। इससे मरीज़ों को हर वर्ष लगभग 27 हजार करोड़ रुपए की बचत हो रही है।

मेरी सरकार, किडनी के मरीजों के लिए मुफ्त डायलिसिस का अभियान भी चला रही है। इसका लाभ प्रतिवर्ष 21 लाख से ज्यादा मरीज उठा रहे हैं। इनके प्रतिवर्ष एक लाख रुपए खर्च होने से बचे हैं। गरीबों को सस्ता राशन मिलता

रहे, इसके लिए मेरी सरकार ने पिछले दशक में करीब 20 लाख करोड़ रुपए खर्च किए हैं।

भारतीय रेल में यात्रा के लिए रेलवे, प्रत्येक टिकट पर, करीब 50 प्रतिशत डिस्काउंट देती है। इससे गरीब और मध्यम वर्ग के यात्रियों को हर वर्ष 60 हजार करोड़ रुपए की बचत होती है। गरीब और मध्यम वर्ग को कम कीमत पर हवाई टिकट मिल रहे हैं। उड़ान योजना के अंतर्गत गरीब और मध्यम वर्ग को हवाई टिकटों पर 3 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा की बचत हुई है। LED बल्ब की योजना के कारण, बिजली के बिलों में 20 हज़ार करोड़ रुपए से अधिक की बचत हुई है। जीवन ज्योति बीमा योजना और सुरक्षा बीमा योजना के तहत, गरीबों को 16 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा की क्लेम राशि मिली है।

नारीशक्ति का सामर्थ्य बढ़ाने के लिए मेरी सरकार हर स्तर पर काम कर रही है। इस वर्ष की गणतंत्र दिवस परेड भी नारीशक्ति के लिए समर्पित थी। इस परेड में दुनिया ने हमारी बेटियों के सामर्थ्य की झलक देखी। मेरी सरकार ने जल, थल, नभ और अंतरिक्ष, हर तरफ बेटियों की भूमिका का विस्तार किया है। हम सब जानते हैं कि महिलाओं के लिए आर्थिक स्वतंत्रता के क्या मायने हैं। मेरी सरकार ने महिलाओं की आर्थिक भागीदारी बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं। आज लगभग 10 करोड़ महिलाएं स्वयं सहायता समूहों से जुड़ चुकी हैं। इन समूहों को 8 लाख करोड़ रुपए बैंक लोन और 40 हजार करोड़ रुपये की आर्थिक सहायता दी गई है।

मेरी सरकार 2 करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी बनाने का अभियान चला रही है। नमो ड्रोन दीदी योजना के तहत, समूहों को 15 हजार ड्रोन उपलब्ध कराये जा रहे हैं।

मातृत्व अवकाश 12 सप्ताह से बढ़ाकर 26 सप्ताह करने से देश की लाखों महिलाओं को बहुत मदद मिली है। मेरी सरकार ने महिलाओं को पहली बार सशस्त्र बलों में परमानेंट कमीशन दिया है। पहली बार सैनिक स्कूलों और राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में महिला कैडेट्स को प्रवेश दिया गया है। आज महिलाएं फाइटर पायलट भी हैं और नौसेना के जहाज को भी पहली बार कमांड कर रही हैं। मुद्रा योजना के तहत जो 46 करोड़ से ज्यादा लोन दिए गए हैं उनमें करीब 31 करोड़ से ज्यादा लोन महिलाओं को मिले हैं। इस योजना से लाभ लेकर करोड़ों महिलाओं ने स्वरोजगार शुरु किया है।

मेरी सरकार आज खेती को अधिक लाभकारी बनाने पर बल दे रही है। हमारा यह प्रयास है कि खेती में लागत कम हो और लाभ अधिक हो। मेरी सरकार ने पहली बार 10 करोड़ से अधिक छोटे किसानों को भी देश की कृषि नीति और योजनाओं में प्रमुखता दी है। पीएम–किसान सम्मान निधि के तहत अब तक 2 लाख 80 हज़ार करोड़ रुपए, किसानों को मिल चुके हैं। 10 सालों में किसानों के लिए बैंक से आसान लोन में 3 गुना वृद्धि की गई है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत किसानों ने 30 हज़ार करोड़ रुपए प्रीमियम भरा। इसके बदले उन्हें डेढ़ लाख करोड़ रुपए का क्लेम मिला है।

पिछले 10 वर्षों में, लगभग 18 लाख करोड़ रुपए MSP के रूप में धान और गेहूं की खेती करने वाले किसानों को मिले हैं। यह 2014 से पहले के 10 सालों की तुलना में ढाई गुना अधिक है। पहले तिलहन और दलहन फसलों की सरकारी खरीद नहीं के बराबर थी। पिछले दशक में तिलहन और दलहन की खेती करने वाले किसानों को MSP के रूप में सवा लाख करोड़ रुपए मिले हैं। यह मेरी ही सरकार है जिसने पहली बार देश में कृषि निर्यात नीति बनाई है। इससे एग्रीकल्चर एक्सपोर्ट, 4 लाख करोड़ रुपए तक पहुंचा है। किसानों को सस्ती खाद मिले, इसके लिए 10 सालों में 11 लाख करोड़ रुपए से अधिक खर्च किए गए हैं। मेरी सरकार ने पौने दो लाख से ज्यादा प्रधानमंत्री किसान समृद्धि केंद्र स्थापित किए हैं।

अभी तक लगभग 8 हज़ार किसान उत्पादक संघ – FPO बनाए जा चुके हैं। मेरी सरकार कृषि में सहकारिता को बढ़ावा दे रही है। इसलिए, देश में पहली बार सहकारिता मंत्रालय बनाया गया। सहकारी क्षेत्र में, दुनिया की सबसे बड़ी अनाज भंडारण योजना शुरू की गई है। इनलैंड फिशरीज का उत्पादन 61 लाख मीट्रिक टन से बढ़कर 131 लाख मीट्रिक टन हो गया। मत्स्य–पालन क्षेत्र में निर्यात भी 30 हजार करोड़ रुपए से बढकर 64 हजार करोड़ रुपए तक, यानी दोगुने से ज्यादा बढ़ा है। देश में पहली बार पशुपालकों और मछुआरों को किसान क्रेडिट कार्ड का लाभ दिया गया है। पिछले दशक में, प्रति व्यक्ति दूध उपलब्धता 40 प्रतिशत बढ़ी है।

अब तक, चार चरणों में, 50 करोड़ से ज्यादा टीके, पशुओं को दिएजा चुके हैं। पशुओं को खुरपका और मुंहपका बीमारियों से बचाने के लिए पहली बार मुफ्त टीकाकरण अभियान चल रहा है।

जनकल्याण की ये जितनी भी योजनाएं हैं, ये सिर्फ सुविधाएं भर नहीं हैं। इनका देश के नागरिकों के पूरे जीवन–चक्र पर सकारात्मक असर पड़ रहा है। विभिन्न सरकारी और गैर–सरकारी संस्थाओं द्वारा, मेरी सरकार की योजनाओं के प्रभावों का अध्ययन किया गया है। इनके परिणाम बहुत ही प्रभावकारी हैं और गरीबी से लड़ रहे दुनिया के हर देश को प्रेरित करने वाले हैं।

बीते वर्षों में विभिन्न संस्थाओं के अध्ययन में सामने आया है कि 11 करोड़ शौचालयों के निर्माण और खुले में शौच बंद होने से, अनेक बीमारियों की रोकथाम हुई है। इससे शहरी क्षेत्र के हर गरीब परिवार को इलाज पर प्रति वर्ष 60 हजार रुपए तक की बचत हो रही है। पाइप से शुद्ध पेयजल मिलने से भी प्रतिवर्ष लाखों बच्चों की जान बच रही है।

पीएम आवास योजना पर हुए अध्ययन के अनुसार, पक्के घर से परिवार की सामाजिक प्रतिष्ठा और गरिमा बढ़ी है। पक्के घरों में बच्चों की पढ़ाई बेहतर हुई है और ड्रॉप आउट की दर मेंकमी आयी है। प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान की वजह से आज देश में शत– प्रतिशत संस्थागत प्रसव हो रहे हैं। इस वजह से माता मृत्यु दर में भी भारी गिरावट आई है। एक और अध्ययन के अनुसार, उज्ज्वला योजना के लाभार्थी परिवारों में, गंभीर बीमारी की घटनाओं में कमी आई है।

मेरी सरकार, मानव केंद्रित विकास पर बल दे रही है। हमारे लिए हर नागरिक की गरिमा सर्वोपरि है। यही सामाजिक न्याय की हमारी अवधारणा है।

भारत के संविधान के हर अनुच्छेद का संदेश भी यही है। हमारे यहां लंबे समय तक सिर्फ अधिकारों पर चर्चा होती थी। हमने सरकार के कर्तव्यों पर भी बल दिया। इससे नागरिकों में भी कर्तव्य–भाव जागा। आज अपने–अपने कर्तव्य के पालन से हर अधिकार की गारंटी का भाव जागृत हुआ है।

जनकल्याण की ये जितनी भी योजनाएं हैं, ये सिर्फ सुविधाएं भर नहीं हैं। इनका देश के नागरिकों के पूरे जीवन-चक्र पर सकारात्मक असर पड़ रहा है।

मेरी सरकार ने उनकी भी सुध ली है, जो अब तक विकास की धारा से दूर रहे हैं। ऐसे हजारों आदिवासी गांव हैं जहां बीते 10 वर्षों में पहली बार बिजली और सड़क पहुंची है। लाखों आदिवासी परिवारों को अब जाकर पाइप से शुद्ध पानी मिलना शुरू हुआ है। विशेष अभियान के तहत मेरी सरकार, हजारों आदिवासी बहुल गांवों में 4G इंटरनेट सुविधा भी पहुंचा रही है। वनधन केंद्रों की स्थापना और 90 से ज्यादा वन–उपज पर MSP दिए जाने से, आदिवासियों को बहुत लाभ हुआ है।

मेरी सरकार ने पहली बार, जनजातियों में भी सबसे पिछड़ी जनजातियों की सुध ली है। उनके लिए लगभग 24 हज़ार करोड़ रुपए की पीएम जनमन योजना बनाई है। आदिवासी परिवारों की अनेक पीढ़ियां सिकल सेल अनीमिया से पीड़ित रही हैं। पहली बार इसके लिए राष्ट्रीय मिशन शुरु किया गया है। अब तक लगभग 1 करोड़ 40 लाख लोगों की जांच की जा चुकी है। दिव्यांगजनों के लिए भी मेरी सरकार ने सुगम्य भारत अभियान चलाया है। साथ ही, भारतीय सांकेतिक भाषा में पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध कराईं हैं। ट्रांसजेंडर को समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाने और उनके अधिकारों के संरक्षण हेतु भी कानून बनाया गया है। हमारे यहां विश्वकर्मा परिवारों के बिना, दैनिक जीवन की कल्पना भी मुश्किल है। ये परिवार, पीढ़ी दर पीढ़ी, अपने कौशल को आगे बढ़ाते हैं। लेकिन सरकारी मदद के अभाव में, हमारे विश्वकर्मा साथी बुरी स्थिति से गुजर रहे थे। मेरी सरकार ने ऐसे विश्वकर्मा परिवारों की भी सुध ली है। अभी तक पीएम विश्वकर्मा योजना से 84 लाख से ज्यादा लोग जुड़ चुके हैं।

रेहड़ी–ठेले–फुटपाथ पर काम करने वाले साथी भी दशकों से अपने हाल पर छोड़ दिए गए थे। मेरी सरकार ने, पीएम स्वनिधि योजना द्वारा उनको बैंकिंग से जोड़ा। इस योजना के तहत, अब तक 10 हज़ार करोड़ रुपए से अधिक की राशि के ऋण दिए जा चुके हैं। सरकार ने इन पर भरोसा करते हुए, बिना collateral के ऋण दिया। उस भरोसे को मजबूत करते हुए, अधिकांश लोगों ने ऋण तो वापस किया ही, अगली किश्त का भी लाभ उठाया। इस योजना के अधिकतर लाभार्थी दलित, पिछड़े, आदिवासी और महिलाएं हैं। सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास के मंत्र पर चल रही मेरी सरकार समाज के हर वर्ग को उचित अवसर देने में जुटी है।

पहली बार सामान्य वर्ग के गरीबों को आरक्षण की सुविधा दी गई। मेडिकल में ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन के लिए ओबीसी के केन्द्रीय कोटे के तहत दाखिले में 27 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चितकिया गया। राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा दिया गया। मेरी सरकार ने बाबा साहेब आंबेडकर से जुड़े 5 स्थानों को पंचतीर्थ केरूप में विकसित किया। आज देशभर में आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों के लिए समर्पित 10 संग्रहालय बनाए जा रहे हैं। मेरी सरकार ने ऐसे क्षेत्रों को भी पहली बार विकास से जोड़ा है जो दशकों तक उपेक्षित रहे। हमारी सीमाओं से सटे गांवों को देश का अंतिम गांव माना जाता था। मेरी सरकार ने, इन्हें देश का पहला गांव बनाया। इन गांवों के विकास के लिए वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम शुरु किया गया है।

अंडमान–निकोबार और लक्षद्वीप जैसे हमारे दूर–सुदूर के द्वीप–समूह भी विकास से वंचित थे। मेरी सरकार ने, इन द्वीपों में भी, आधुनिक सुविधाओं का निर्माण किया। वहां सड़क, हवाई यातायात और तेज इंटरनेट की सुविधाएं पहुंचाईं। कुछ सप्ताह पूर्व ही, लक्षद्वीप को भी अंडर वॉटर

ऑप्टिकल फाइबर से जोड़ा गया है। इससे स्थानीय लोगों के साथ ही, पर्यटकों को भी सुविधा होगी।

मेरी सरकार आज पूरी सीमा पर आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर बना रही है। यह काम बहुत पहले ही, प्राथमिकता के आधार पर हो जाना चाहिए था। आतंकवाद हो या विस्तारवाद, हमारी सेनाएं आज 'जैसे को तैसा' की नीति के साथ जवाब दे रही हैं। आंतरिक शांति के लिए मेरी सरकार के प्रयासों के सार्थक परिणाम हमारे सामने हैं। जम्मू कश्मीर में आज सुरक्षा का वातावरण है।

आज वहां हड़ताल का सन्नाटा नहीं, भीड़ भरे बाजार की चहल–पहल है। नॉर्थ–ईस्ट में अलगाववाद की घटनाओं में भारी कमी आई है। अनेक संगठनों ने स्थाई शांति की तरफ कदम बढ़ाए हैं। नक्सलवाद से प्रभावित क्षेत्र घटे हैं और नक्सली हिंसा में भी भारी गिरावट हुई है।

भारत के लिए, यह समय आने वाली सदियों का भविष्य लिखने का है। हमारे पूर्वजों ने हज़ारों वर्षों की एक विरासत हमारे लिए छोड़ी है। अपने पूर्वजों की सौगातों को आज भी हम बड़े गौरव के साथ याद करते हैं। आज की पीढ़ी को भी ऐसी विरासत बनानी है जो सदियों तक याद रखी जाए।

द्रौपदी मुर्मू, राष्ट्रपति

इसलिए, मेरी सरकार आज एक बड़े विजन पर काम कर रही है। इस विजन में आने वाले 5 वर्ष का कार्यक्रम भी है। इसमें आने वाले 25 साल का रोडमैप भी है। हमारे लिए विकसित भारत सिर्फ आर्थिक समृद्धि तक सीमित नहीं है। हम सामाजिक, सांस्कृतिक और सामरिक ताकत को भी उतना ही महत्व दे रहे हैं। इनके बिना विकास और आर्थिक समृद्धि स्थाई नहीं रह सकती। बीते दशक के फैसले भी, इसी ध्येय से लिए गए हैं। आज भी अनेक कदम इसी लक्ष्य के साथ उठाए जा रहे हैं।

भारत के तेज विकास को लेकर आज दुनिया की हर एजेंसी आश्वस्त है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां जो भी आकलन कर रही हैं, उनका आधार भारत की नीतियां हैं। इंफ्रास्ट्रक्चर में रिकॉर्ड निवेश और पॉलिसी रिफॉर्म, निवेशकों का विश्वास और बढ़ा रहे हैं। पूर्ण बहुमत वाली स्थिर और मजबूत सरकार के लिए भारतीयों का संकल्प भी दुनिया को नया भरोसा दे रहा है।

PLI से इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मा, फूड प्रोसेसिंग और मेडिकल डिवाइस के सेक्टर में भी लाभ हो रहा है। मेडिकल डिवाइस से जुड़े दर्जनों प्रोजेक्ट्स में उत्पादन शुरु हो चुका है। मेरी सरकार ने देश में 3 बल्क ड्रग पार्क भी बनाए हैं।

आज मेड इन इंडिया एक ग्लोबल ब्रांड बन चुका है। मेक इन इंडिया को लेकर आज दुनिया आकर्षित हो रही है।

आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को दुनिया समझ रही है। आज दुनिया भर की कंपनियां भारत में नए सेक्टर्स को लेकर उत्साहित हैं। सेमी–कंडक्टर सेक्टर में हो रहा निवेश इसका उदाहरण है। सेमी–कंडक्टर सेक्टर से इलेक्ट्रॉनिक्स और ऑटोमोबील सेक्टर को भी बहुत लाभ होगा।

मेरी सरकार आज ग्रीन मोबिलिटी को बहुत प्रोत्साहन दे रही है। बीते कुछ सालों में ही देश में लाखों इलेक्ट्रिक वाहनों का निर्माण हुआ है। अब तो हम भारत में ही बड़े हवाई जहाज़ की मैन्युफेक्चरिंग के लिए भी कदम बढ़ा चुके हैं। आने वाले समय में मैन्युफेक्चरिंग सेक्टर में करोड़ों नए रोजगारों का सृजन होगा।

विश्व में आज ऐसे उत्पादों की विशेष मांग है, जो पर्यावरण के अनुकूल हों। इसलिए मेरी सरकार, zero effect zero defect पर बल दे रही है। आज ग्रीन एनर्जी पर हमारा बहुत फोकस है। 10 वर्षों में non-fossil fuel पर आधारित ऊर्जा क्षमता 81 गीगावॉट से बढ़कर 188 गीगावॉट हो चुकी है। इस दौरान सोलर पावर कैपेसिटी में 26 गुना बढ़ोतरी हुई है। इसी तरह, Wind power capacity दोगुनी हो गई है। Renewable Energy Installed Capacity की दृष्टि से हम दुनिया में चौथे नंबर पर हैं। Wind Power capacity में भी हम चौथे नंबर पर हैं। Solar Power capacity में हम पांचवें नंबर पर हैं। भारत ने 2030 तक अपनी स्थापित क्षमता का 50 प्रतिशत non-fossil fuel से पूरा करने का लक्ष्य रखा है। बीते 10 वर्षों में 11 नए सोलर पार्क बन चुके हैं। 9 सोलर पार्कों पर आज काम चल रहा है।

कुछ दिन पहले ही घर की छत पर सोलर एनर्जी उपलब्ध कराने के लिए एक नई योजना घोषित की गई है। इसके तहत 1 करोड़ परिवारों को मदद दी जाएगी। इससे बिजली का बिल भी कम होगा और अतिरिक्त बिजली की खरीद विद्युत बाजार में की जाएगी।

हाइड्रोजन एनर्जी के क्षेत्र में भी भारत तेज गति से आगे बढ़

रहा है। हम अभी तक लद्दाख और दमन–दीव में दो प्रोजेक्ट शुरु कर चुके हैं। मेरी सरकार ने इथेनॉल के क्षेत्र में अभूतपूर्व काम किया है। देश, 12 प्रतिशत इथेनॉल ब्लेंडिंग का लक्ष्य हासिल कर चुका है। बहुत ही जल्द, 20 प्रतिशत इथेनॉल ब्लेंडिंग का टारगेट भी पूरा होने वाला है। इससे हमारे किसानों की आय बढ़ेगी। अभी तक सरकारी कंपनियां एक लाख करोड़ रुपए से ज्यादा का इथेनॉल खरीद चुकी हैं। इन सारे प्रयासों से अपनी ऊर्जा ज़रूरतों के लिए विदेशों पर निर्भरता कम होगी। कुछ दिन पहले ही, बंगाल की खाड़ी में एक नए ब्लॉक में तेल उत्पादन शुरु हुआ है। यह देश के लिए एक बड़ी सफलता है।

धरती में महत्वपूर्ण खनिजों की मात्रा सीमित है। इसलिए मेरी सरकार सर्कुलर इकॉनॉमी को प्रोत्साहित कर रही है।

भारत की पहली वेहिकल स्क्रैपेज पॉलिसी का लक्ष्य भी यही है। गहरे समुद्र में खनिजों की संभावनाओं को तलाशना भी ज़रूरी है। इसी लक्ष्य के साथ डीप ओशन मिशन शुरु किया गया। इस मिशन से अपने समुद्री जन–जीवन के बारे में हमारी समझ भी बेहतर होगी। भारत का समुद्र–यान इस क्षेत्र में शोध कर रहा है।

मेरी सरकार, भारत को दुनिया की एक बड़ी स्पेस पावर बनाने में जुटी है। यह मानव जीवन को बेहतर बनाने का एक माध्यम है। साथ ही यह स्पेस इकॉनॉमी में भारत की हिस्सेदारी बढ़ाने का भी प्रयास है। भारत के स्पेस प्रोग्राम के विस्तार के लिए महत्वपूर्ण फैसले लिए गए हैं। इसके कारण अनेक नए स्पेस स्टार्ट–अप्स बने हैं। अब वह दिन दूर नहीं है जब भारत का गगनयान स्पेस में जाएगा।

मेरी सरकार ने भारत को दुनिया की अग्रणी डिजिटल इकॉनॉमीज़ में से एक बनाया है। इससे करोड़ों युवाओं को रोज़गार मिला है। हमारा प्रयास है कि चौथी औद्योगिक क्रांति में भारत दुनिया में सबसे आगे रहे।

मेरी सरकार आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मिशन पर काम कर रही है। यह भारत के युवाओं को नए अवसर देगा। यह नए स्टार्ट–अप्स के लिए संभावनाएं खोलेगा। इससे कृषि, स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव आएंगे।

मेरी सरकार ने नेशनल क्वांटम मिशन भी स्वीकृत किया है। क्वांटम कंप्यूटिंग, नए दौर की डिजिटल व्यवस्था बनाएगा। इस क्षेत्र में भारत आगे रहे इसके लिए काम शुरू हो चुका है।

मेरी सरकार, भारत की युवाशक्ति की शिक्षा और कौशल विकास के लिए निरंतर नए कदम उठा रही है। इसके लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाई गई और उसे तेजी से लागू किया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा और भारतीय भाषाओं में शिक्षा पर बल दिया गया है। इंजीनियरिंग, मेडिकल, कानून जैसे विषयों की पढ़ाई भारतीय भाषाओं में प्रारंभ कर दी गई है। स्कूली शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए मेरी सरकार, 14 हज़ार से अधिक पीएम श्री विद्यालयों पर काम कर रही है। इनमें से 6 हज़ार से अधिक विद्यालय शुरु हो चुके हैं।

इनोवेशन को बढ़ावा देने के लिए अटल इनोवेशन मिशन के अंतर्गत 10 हज़ार अटल टिंकरिंग लैब स्थापित किए गए है। इनमें 1 करोड़ से अधिक विद्यार्थी जुड़े हैं।

साल 2014 तक देश में 7 एम्स और 390 से भी कम मेडिकल कॉलेज थे। वहीं पिछले दशक में 16 एम्स और 315 मेडिकल कॉलेज स्थापित किए गए हैं। 157 नर्सिंग कॉलेज स्थापित किए जा रहे हैं। पिछले दशक में, MBBS की सीटों में दोगुने से भी अधिक की वृद्धि हुई है।

पर्यटन क्षेत्र, युवाओं के लिए रोज़गार देने वाला एक बड़ा सेक्टर है। मेरी सरकार ने बीते 10 वर्षों में पर्यटन के क्षेत्र में अभूतपूर्व काम किया है। भारत में घरेलू टूरिस्ट्स की संख्या के साथ ही, भारत आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या भी बढ़ी है। पर्यटन के क्षेत्र में जो वृद्धि हो रही है, इसका कारण भारत की बढ़ती साख है।

आज दुनिया भारत को देखना और जानना चाहती है। इसके अलावा, शानदार कनेक्टिविटी विकसित होने के कारण भी पर्यटन का दायरा बढ़ा है। जगह–जगह एयरपोर्ट्स बनने से भी बहुत फायदा हो रहा है। नॉर्थ–ईस्ट में आज रिकॉर्ड संख्या में टूरिस्ट पहुंच रहे हैं। अंडमान– निकोबार और लक्षद्वीप को लेकर उत्साह चरम पर है।

मेरी सरकार ने देश भर में तीर्थों और ऐतिहासिक स्थलों के विकास पर बल दिया है। इससे अब भारत में तीर्थ यात्रा आसान हुई है। वहीं दुनिया भी, भारत में हैरिटेज टूरिज्म को लेकर आकर्षित हो रही है।

बीते एक वर्ष में साढ़े आठ करोड़ लोग काशी गए हैं। 5 करोड़ से अधिक लोगों ने महाकाल के दर्शन किए हैं। उन्नीस लाख से अधिक लोगों ने केदार धाम की यात्रा की है। अयोध्या धाम में ही प्राण प्रतिष्ठा के बाद 5 दिनों में ही

13 लाख श्रद्धालु दर्शन कर चुके थे।

पूर्व–पश्चिम–उत्तर–दक्षिण, भारत के हर हिस्से में तीर्थ स्थलों पर सुविधाओं का अभूतपूर्व विस्तार हो रहा है। मेरी सरकार भारत को मीटिंग और प्रदर्शनी से जुड़े सेक्टर में भी अग्रणी बनाना चाहती है। इसके लिए भारत मंडपम और यशोभूमि जैसा इंफ्रास्ट्रक्चर बनाया जा रहा है। आने वाले समय में टूरिज्म, रोजगार का एक बहुत बड़ा माध्यम बनेगा।

देश की युवाशक्ति को कौशल और रोजगार से जोड़ने के लिए हम स्पोर्ट्स इकॉनॉमी को मजबूत कर रहे हैं।

मेरी सरकार ने खेलों और खिलाड़ियों को अभूतपूर्व मदद दी है। आज भारत एक बहुत बड़ी खेल शक्ति बनने की ओर अग्रसर है। खिलाड़ियों के साथ ही आज हम स्पोर्ट्स से जुड़े दूसरे क्षेत्रों पर भी बल दे रहे हैं। आज नेशनल स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी बन चुकी है। देश में हमने दर्जनों सेंटर ऑफ एक्सीलेंस बनाए हैं। इससे स्पोर्ट्स को एक प्रोफेशन के रूप में चुनने का अवसर युवाओं को मिलेगा। खेल उपकरणों से जुड़ी इंडस्ट्री को भी हर प्रकार की मदद दी जा रही है। बीते 10 वर्षों में भारत ने अनेक खेलों से जुड़े इंटरनेशनल स्पोर्ट्स इवेंट्स का शानदार आयोजन किया। देश के युवाओं में कर्तव्य–बोध और सेवा–भाव का विस्तार करने के लिए 'मेरा युवा भारत' संगठन बनाया गया है। अभी तक इस संगठन से लगभग 1 करोड़ युवा जुड़ चुके हैं।

मेरी सरकार ने वैश्विक विवादों और संघर्षों के इस दौर में भी, भारत के हितों को मजबूती से दुनिया के सामने रखा है।

इस कठिन दौर में, मेरी सरकार ने, भारत को विश्व–मित्र के रूप में स्थापित किया है। विश्व– मित्र की भूमिका के कारण ही आज हम ग्लोबल साउथ की आवाज़ बन पाए हैं। हमारे प्रयासों से G–20 में अफ्रीकन यूनियन की स्थाई सदस्यता को भी सराहा गया है। इसी सम्मेलन के दौरान भारत–मिडिलईस्ट–यूरोप कॉरिडोर के निर्माण की घोषणा हुई। यह कॉरिडोर, भारत के सामुद्रिक सामर्थ्य को और सशक्त करेगा। ग्लोबल बायो फ्यूल अलायंस का लॉन्च होना भी बहुत बड़ी घटना है। इस प्रकार के कदम वैश्विक समस्याओं के समाधान में भारत की भूमिका का विस्तार कर रहे हैं।

मेरी सरकार ने वैश्विक विवादों और संघर्षों के इस दौर में भी, भारत के हितों को मजबूती से दुनिया के सामने रखा है। भारत की विदेश नीति का दायरा आज अतीत की बंदिशों से कहीं आगे बढ़ चुका है।

आज भारत अनेक वैश्विक संगठनों का सम्मानित सदस्य है। आज आतंकवाद के खिलाफ भारत दुनिया की एक प्रमुख आवाज है। भारत आज संकट में फंसी मानवता की मदद के लिए मजबूती से पहल करता है। दुनिया में कहीं भी संकट आने पर भारत वहां तेज़ी से पहुंचने का प्रयास करता है। मेरी सरकार ने दुनिया भर में काम कर रहे भारतीयों में नया भरोसा जगाया है। ऑपरेशन गंगा, ऑपरेशन कावेरी और वंदे भारत जैसे अभियान चलाकर जहां–जहां संकट आया वहां से हर भारतीय को हम तेजी से सुरक्षित वापस लेकर आए हैं।

मेरी सरकार ने योग, प्राणायाम और आयुर्वेद की भारतीय परंपराओं को पूरी दुनिया तक पहुंचाने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं। मेरी सरकार ने आयुष पद्धतियों के विकास के लिए एक नया मंत्रालय बनाया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का पहला Global Centre for Traditional Medicine भी भारत में बन रहा है।

सभ्यताओं के कालखंड में ऐसे पड़ाव आते हैं जो सदियों का भविष्य तय करते हैं। भारत के इतिहास में भी ऐसे अनेक पड़ाव आए हैं। इस वर्ष, 22 जनवरी को भी देश ऐसे ही एक पड़ाव का साक्षी बना है। सदियों की प्रतीक्षा के बाद अयोध्या में रामलला अपने भव्य मंदिर में विराजमान हो गए हैं। यह करोड़ों देशवासियों की इच्छा और आस्था का प्रश्न था, जिसका उत्तर देश ने पूरे सद्भाव के साथ खोजा है।

आप सभी, करोड़ों भारतीयों की आकांक्षाओं के प्रतिनिधि हैं। आज जो युवा स्कूल–कॉलेज में है, उसके सपने बिल्कुल अलग हैं। हम सभी का यह दायित्व है कि अमृत पीढ़ी के सपनों को पूरा करने में कोई कसर बाकी न रहे। विकसित भारत, हमारी अमृत पीढ़ी के सपनों को साकार करेगा।

इसलिए, हम सभी को, एक साथ मिलकर, संकल्पों की सिद्धि के लिए जुटना होगा।

श्रद्धेय अटल जी ने कहा था–

अपनी ध्येय–यात्रा में,
हम कभी रुके नहीं हैं।
किसी चुनौती के सम्मुख
कभी झुके नहीं हैं।

मेरी सरकार, 140 करोड़ देशवासियों के सपनों को पूरा करने की गारंटी के साथ आगे बढ़ रही है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह नया संसद भवन भारत की ध्येय–यात्रा को निरंतर ऊर्जा देता रहेगा, नई और स्वस्थ परंपराएं बनाएगा। वर्ष 2047 को देखने के लिए अनेक साथी तब इस सदन में नहीं होंगे। लेकिन हमारी विरासत ऐसी होनी चाहिए कि तब की पीढ़ी हमें याद करे।

योग : समाज में सकारात्मक बदलाव

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर मुझे योग और साधना की भूमि कश्मीर में आने का सौभाग्य मिला है। कश्मीर और श्रीनगर का ये वातावरण, ये ऊर्जा और अनुभूति योग से हमें जो शक्ति मिलती है, श्रीनगर में हम उसे महसूस कर रहे हैं। मैं देश के सभी लोगों को, दुनिया के कोने–कोने में योग कर रहे लोगों को कश्मीर की धरती से योग दिवस की बधाई देता हूँ।

इंटरनेशनल योगा डे 10 वर्ष की ऐतिहासिक यात्रा पूरी कर चुका है। 2014 में मैंने यूनाइटेड नेशंस में इंटरनेशनल योगा डे का प्रस्ताव रखा था। भारत के इस प्रस्ताव का 177 देशों ने समर्थन किया था और ये अपने आप में एक रिकॉर्ड था। तब से, योग दिवस लगातार नए रिकॉर्ड बनाता जा रहा है। 2015 में दिल्ली में कर्तव्य पथ पर 35 हजार लोगों ने एक साथ योग किया। ये भी एक विश्व रिकॉर्ड था। पिछले साल मुझे अमेरिका में UN हेडक्वार्टर में योग दिवस के आयोजन का नेतृत्व करने का अवसर मिला था। इसमें भी 130 से ज्यादा देशों के लोगों ने भाग लिया था। योग की ये यात्रा अनवरत जारी है। भारत में आयुष विभाग ने योग practitioners के लिए Yoga Certification Board बनाया है। मुझे खुशी है कि आज देश में 100 से ज्यादा बड़े संस्थानों को इस बोर्ड से मान्यता मिल चुकी है। विदेश के 10 बड़े संस्थानों ने भी भारत के इस बोर्ड से मान्यता प्राप्त की है।

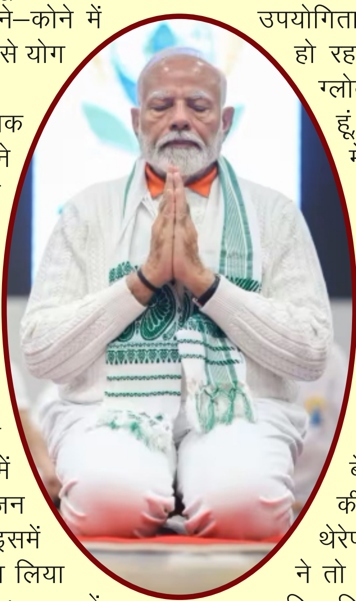

आज पूरी दुनिया में योग करने वालों की संख्या निरंतर बढ़ रही है, योग के प्रति आकर्षण भी बढ़ रहा है। योग की उपयोगिता के संबंध में भी जन सामान्यी convince हो रहा है। मैं विश्व में हर जगह जितने भी ग्लोबल लीडर्स से मिलता हूँ, जहां भी जाता हूं, शायद ही कोई एकाध मिल जाएगा जो मेरे से योग की बात न करता हो। दुनिया के सभी वरिष्ठ नेता, जब भी मौका मिलता है मेरे से योग की चर्चा जरूर करते हैं और बड़ी जिज्ञासा से सवाल पूछते हैं। दुनिया के कितने ही देशों में योग डेली लाइफ का हिस्सा बन रहा है। मुझे याद है, मैंने 2015 में तुर्कमेनिस्तान में योग सेंटर का उद्घाटन किया था। आज वहाँ योग बेहद पॉपुलर हो चुका है। तुर्कमेनिस्तान की स्टेट मेडिकल यूनिवर्सिटी में भी योगा थेरेपी को शामिल किया गया है। सऊदी अरब ने तो योग को अपने एजुकेशन सिस्टम में भी शामिल किया है। मंगोलिया में भी मंगोलियन योग फ़ाउंडेशन के तहत कई योग स्कूल चलाये जा रहे हैं। यूरोपियन देशों में भी योग का चलन तेजी से बढ़ा है। जर्मनी में आज करीब डेढ़ करोड़ लोग, योग practitioners

बन चुके हैं। आपको ध्यान होगा, इसी साल भारत में फ्रांस की 101 साल की एक महिला योग टीचर को पद्मश्री अवार्ड दिया गया है। वो कभी भारत नहीं आई थीं, लेकिन उन्होंने योग के प्रचार के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया है। आज विश्व के बड़े–बड़े institutions और universities में योग पर रिसर्च हो रही है, रिसर्च पेपर्स पब्लिश हो रहे हैं।

बीते दस वर्षों में योग का ये जो विस्तार हुआ है, उससे योग से जुड़ी धारणाएं बदली हैं। योग अब सीमित दायरों से बाहर निकल रहा है। आज दुनिया एक नई योग इकॉनमी को आगे बढ़ते देख रही है। आप देखिए, भारत में ऋषिकेश, काशी से लेकर केरल तक, योग टूरिज़्म का नया ट्रेंड देखने को मिल रहा है। दुनिया भर से टूरिस्ट इसलिए भारत आ रहे हैं, क्योंकि उन्हें भारत में authentic योग सीखना है। आज योगा रिट्रीट बन रहे हैं। योगा रिज़ॉर्ट बन रहे हैं। Airports में, होटेल्स में योग के लिए dedicated facilities बनाई जा रही हैं। मार्केट में योग के लिए डिजाइनर परिधान, एपेरल्स, equipment आ रहे हैं। लोग अब अपनी फिटनेस के लिए पर्सनल योग ट्रेनर्स भी रख रहे हैं। कंपनियाँ भी employee wellness initiatives के तौर पर योग और माइंडफुलनेस प्रोग्राम्स शुरू कर रही हैं। इन सबने युवाओं के लिए नए अवसर बनाए हैं, युवाओं के लिए रोजगार के मौके बनाए हैं।

योग केवल एक विधा नहीं है, बल्कि एक विज्ञान भी है। आज सूचना क्रांति के इस दौर में हर ओर सूचना संसाधनों की बाढ़ है। ऐसे में, मानव मस्तिष्क के लिए एक विषय पर फोकस कर पाना एक बड़ी चुनौती साबित हो रहा है। इसका भी निदान हमें योग से मिलता है। हम जानते हैं, एकाग्रता मानव मन की सबसे बड़ी ताकत है। योग–ध्यान के जरिए हमारा ये सामर्थ्य भी निखरता है। इसीलिए, आज आर्मी से लेकर स्पोर्ट्स तक में योग को शामिल किया जा रहा है। स्पेस प्रोग्राम्स में भी जो एस्ट्रोनॉट्स को ट्रेनिंग दी जाती है, उन्हें भी योग और ध्यान की ट्रेनिंग दी जाती है। इससे productivity भी बढ़ती है, सहनशक्ति भी बढ़ती है। आजकल तो कई जेलों में कैदियों को भी योग कराया जा रहा है, ताकि वो सकारात्मक विचारों पर अपने मन को केन्द्रित कर सकें। यानि योग समाज में सकारात्मक बदलाव के नए रास्ते बना रहा है।

मुझे विश्वास है, योग की ये प्रेरणा हमारे सकारात्मक प्रयासों को ऊर्जा देती रहेगी।

आज थोड़ा विलंब हुआ, क्योंकि वर्षा ने कुछ बाधाएं पैदा की, लेकिन मैं कल से मैं देख रहा हूं, पूरे जम्मू–कश्मीर में श्रीनगर में योग के प्रति जो आकर्षण बना है, जिस उमंग और उत्साह के साथ लोग योग के साथ जुड़ने के लिए आतुर हैं, ये अपने आप में जम्मू–कश्मीर के टूरिज्म को देने के लिए एक नई ताकत का अवसर बन गया है। मैं आज इस कार्यक्रम के बाद ऐसे जो योग से जुड़े लोग हैं, उनको मिलकर के ही जाऊंगा। बारिश के कारण हमें इस खण्ड में

आज इस कार्यक्रम को करना पड़ रहा है। लेकिन मैं मानता हूं कि जम्मू–कश्मीर में 50–60 हजार लोगों का योग कार्यक्रम में जुड़ना, ये बहुत बड़ी बात है और इसलिए मैं जम्मू–कश्मीर के लोगों को बहुत–बहुत बधाई देता हूं। इसी के साथ, आप सभी को एक बार फिर योग दिवस की बहुत–बहुत बधाई। पूरे विश्व के योग प्रेमियों को मेरी बहुत–बहुत शुभकामनाएं।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा रसायन एवं उर्वरक मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने आज दिल्ली के यमुना स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में दसवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयोजित योग कार्यक्रम में योगाभ्यास किया। श्री नड्डा ने देशवासियों को दसवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर शुभकामनाएं देते हुए उनसे आह्वान किया कि अपने दैनिक जीवन शैली में योग अपनाएँ। इस अवसर पर भाजपा के राष्ट्रीय मीडिया सह प्रमुख डॉ संजय मयूख समेत डीडीए एवं स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के पदाधिकारी, खिलाड़ी एवं बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों ने शिरकत की।

श्री नड्डा ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर मुझे यमुना स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में योग प्रेमी भाईयों एवं बहनों के साथ योग करने का सौभाग्य मिला है। हम सभी लोग जानते हैं कि आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सितंबर 2014 में संयुक्त राष्ट्र संघ के जनरल असेम्बली में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का प्रस्ताव दिया था जिसे संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ–साथ दुनिया के लगभग 177 देशों ने अंगीकार किया और अगले ही वर्ष 2015 से 21 जून को पूरी दुनिया में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पूरे उत्साह और उमंग के साथ मनाया जाने लगा। इस बार हमलोग माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में दसवां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मना रहे हैं। योग की विधा अब सिर्फ देश में सीमित नहीं है, बल्कि दुनिया के कोने–कोने तक पहुंची है और सभी लोग इसमें अपने आप को शामिल कर रहे हैं। योग का वैश्विक प्रसार व प्रतिष्ठा भारत के लिए गौरव की बात है। यह दुनिया को भारत की ओर से दिया गया एक अमूल्य धरोहर है।

माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि इस बार के योग दिवस की थीम है – स्वयं और समाज के लिए योग। यह दर्शाता है कि योग केवल व्यक्तिगत कल्याण के बारे में नहीं है बल्कि यह शरीर, आत्मा और बाहरी दुनिया के बीच संबंधों को भी बढ़ावा देता है। उन्होंने देशवासियों से आग्रह किया कि अपने दैनिक जीवन में योग को जोड़ें ताकि आप स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त रहें।

श्री नड्डा ने कहा कि योग हमारे शारीरिक, मानसिक एवं अध्यात्मिक, तीनों का जोड़ है। योग से हमारा शरीर स्वस्थ रहने के साथ हमारी आंतरिक शक्ति भी जागृत होती है, जिससे वृहत रूप से कार्य क्षमता में बढ़ोत्तरी होती है। उन्होंने सभी लोगों से आह्वान करते हुए कहा कि आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में योग दुनिया की विधा बनी है उसे आगे बढ़ाने में हमसब लोग योगदान करें।

पहली बार UN पहुँचते ही मोदी जी ने रखा था 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने का प्रस्ताव। 'वसुधैव कुटुंबकम' के मंत्र को योग कर रहा है चरितार्थ। भारत ने पूरे विश्व और मानवता को अगर सबसे बड़ा उपहार दिया है, तो वह योग है। मन, शरीर और आत्मा के बीच में एकात्मता लाने का नाम है योग।

योग दिवस की भेंट देकर मोदी जी ने विश्व भर में फहराया

भारतीय संस्कृति और ज्ञान का झंडा। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने आज अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर गुजरात के अहमदाबाद में योगाभ्यास किया और देश और दुनिया के सभी योगप्रेमियों को शुभकामनाएं दीं।

अपने संबोधन में श्री अमित शाह ने कहा कि उन्होंने कहा कि आज पूरा विश्व योग दिवस मना रहा है और ये दिन एक विशेष महत्व इसीलिए रखता है क्योंकि ये 10वां योग दिवस है। उन्होंने कहा कि 2014 में देश ने एक ऐतिहासिक फैसला लेते हुए श्री नरेन्द्र मोदी जी को प्रधानमंत्री बनाने का निर्णय लिया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री बनने के बाद श्री नरेन्द्र मोदी जी जब पहली बार संयुक्त राष्ट्र महासभा में गए तब उन्होंने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव रखा। श्री शाह ने कहा कि मोदी जी ने ना सिर्फ प्रस्ताव रखा बल्कि हमारे चिरपुरातन विज्ञान और हमारे ऋषि,–मुनियों की एक अनुपम भेंट का परिचय भी विश्व के नेताओं को कराया। उन्होंने कहा कि कुछ ही दिन में 170 से अधिक देशों ने योग दिवस मनाने को सहमति दी और वहीं से पूरा विश्व योग के रास्ते पर चल पड़ा।

केन्द्रीय गृह मंत्री ने कहा कि भारत ने पूरे विश्व और मानवता को काफी कुछ दिया है लेकिन अगर कोई सबसे बड़ा उपकार और उपहार दिया है तो वह योग को विश्व को देने का काम किया है। उन्होंने कहा कि मन, शरीर और आत्मा के बीच में एकात्मता लाने का योग से बड़ा कोई और विज्ञान नहीं है और मन के अंदर की अगाध शक्तियों के महासागर में गोता लगाने का एकमात्र माध्यम योग ही है। श्री शाह ने कहा कि अपने मन के अंदर की शक्तियों को आत्मा के साथ जोड़कर विश्व कल्याण के रास्ते पर ले जाने का योग से बड़ा कोई और माध्यम नहीं हो सकता। इसके साथ ही, आज के ज़माने में प्रचलित कई रोगों का उपाय भी योग ही है। श्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के इस प्रयास से पूरी मानवता के लिए योग को एक बड़ा मंच मिला है। उन्होंने कहा कि आज पूरा विश्व योग को स्वीकार रहा है, सीख रहा है और सिखा रहा है। उन्होंने कहा कि ना सिर्फ भारत बल्कि पूरे विश्व में लाखों लोगों ने योग को मन से स्वीकार कर आगे बढ़ाने का काम किया है।

श्री अमित शाह ने कहा कि गुजरात सरकार और सभी के सहयोग से लगभग सवा करोड़ से ज़्यादा लोगों ने आज सुबह गुजरात में योगाभ्यास किया है। उन्होंने कहा कि गुजरात सरकार ने योग को बढ़ावा देने और इसे खेल के

रूप में भी मान्यता देने का काम किया है। श्री शाह ने कहा कि हमारे वेदों द्वारा दिए गए वसुधैव कुटुंबकम के सूत्र को चरितार्थ करने का काम योग कर रहा है। उन्होंने कहा कि 21 जून के दिन पूरी दुनिया में अलग–अलग समय पर कहीं ना कहीं योग हो रहा है। श्री शाह ने कहा कि योग के माध्यम से हम निष्काम कर्म की कल्पना को निरंतर प्रयास से सिद्ध कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि पूरे विश्व के कल्याण के मंत्र को ज़मीन पर उतारने के लिए भी निरंतर योगाभ्यास ज़रूरी है।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि हमारे ऋषियों का दिया गया ज्ञान ही हमें आगे बढ़ा सकता है। हमारे शारीरिक सामर्थ्य, मन की शांति और कल्पनाओं के विस्तार, चेतना शक्ति के केन्द्रीकरण और पूरे देश की सामूहिक ऊर्जा की जागृति के लिए योग से बड़ा कोई साधन हो नहीं सकती।

श्री शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी ने योग दिवस की भेंट देकर पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति और ज्ञान का ध्वज फहराने का काम किया है।

भारतीय जनता पार्टी ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून पर योग से निरोग के संदेश के साथ प्रदेशभर में कार्यक्रम आयोजित किए। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने प्रदेश कार्यालय एवं प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह राजधानी के कैंट विधानसभा क्षेत्र में हुए योग दिवस के कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने भाजपा प्रदेश मुख्यालय में योग दिवस कार्यक्रम में कहा कि योग भारतीय संस्कृति की अनुपम धरोहर है। जिसे आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रयास से विश्व योग दिवस के रूप में पूरे विश्व ने स्वीकार किया है और सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया के भारतीय विचार से विश्व निरोगी हो रहा है। आज योग पूरे विश्व के लोगों की जीवन शैली बन चुका है।

उन्होंने कहा कि योग भारतीय संस्कृति का दुनिया को दिया गया एक बहुमूल्य उपहार है, जिसे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने अथक प्रयासों से पूरे विश्व में पहुंचाने का कार्य किया है। श्री चौधरी ने कहा कि आज पूरा विश्व योग कर रहा है। भारतीय परम्परा, संस्कृति एवं ज्ञान को विश्व स्वीकार भी कर रहा है और अंगीकार भी कर रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय संस्कृति, संस्कार, ज्ञान की विश्व स्वीकार्यता तथा पुनर्प्रतिष्ठा का युग प्रारम्भ हुआ है।

प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने राजधानी के कैंट विधानसभा के मण्डल मध्य के श्रृंगार नगर स्थित सेंट्रल पार्क में हुए योग दिवस कार्यक्रम में कहा कि भारत ने सदियों से योग को विज्ञान और जीवनशैली के रूप में अपनाया है। हमारे ऋषि–मुनियों ने वैदिक काल से ही योग को दिनचर्या का हिस्सा बनाया। योग जीवन का वह दर्शन है जो मनुष्य को शारीरिक रूप से निरोगी बनाकर आध्यात्मिकता से परिपूर्ण करके विश्व कल्याण के लिए प्रेरित करता है। योग दिवस की बधाई देते हुए श्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि योग विश्व को भारत का वह वरदान है जो ना सिर्फ शरीर व मन को स्वस्थ करता है बल्कि सामाजिक दायित्वों के प्रति समर्पित नागरिकों का निर्माण भी करता है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पुरातन भारतीय ज्ञान के आलोक से विश्व आलोकित भी हो रहा है तथा लाभान्वित भी हो रहा है।

प्रदेश के सभी जनपदों में हुए कार्यक्रम में पार्टी कार्यकर्ताओं ने योग करके सर्वे सन्तु निरामया का विश्व को संदेश दिया। पार्टी के पदाधिकारी तथा कार्यकर्ताओं ने स्थानीय नागरिकों के साथ मिलकर योग किया। इसके साथ ही पार्टी के सांसद, विधायक, प्रदेश सरकार के मंत्री, आयोग निगम बोर्ड के अध्यक्ष व सदस्य, नगरीय निकायों के अध्यक्ष व सदस्य तथा त्रिस्तरीय पंचायत के अध्यक्ष व सदस्यों सहित स्थानीय नागरिकों ने तन और मन को निरोगी रखने वाले योग को करते हुए विश्व मंगल की कामना की।

एक पेड़ माँ के नाम

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने आज पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के अग्रदूत तथा जन संघ के संस्थापक श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के बलिदान दिवस पर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पित कर भाजपा के करोड़ों कार्यकर्ताओं की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष ने एकात्म मानववाद के प्रणेता श्रद्धेय पंडित दीनदयाल उपाध्याय की मूर्ति पर भी माल्यार्पण किया। श्री नड्डा ने बलिदान दिवस पर भारतीय जनता पार्टी के करोड़ों कार्यकर्ताओं से आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आह्वान पर **"एक पेड़ मां के नाम"** अभियान को सफल बनाने की भी अपील की। उन्होंने इस अवसर पर पौधारोपण किया और पौधा वितरण भी किया।

श्री नड्डा ने इस अवसर पर कहा कि भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी की पुण्यतिथि को बलिदान दिवस के रूप में मनाती है। श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने 23 जून 1953 को श्रीनगर जेल में संदिग्ध परिस्थितियों में अपनी अंतिम सांस ली थी और यह रहस्यमयी परिस्थिति हम सभी के लिए आज तक एक प्रश्नचिह्न बना हुआ है। श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी एक महान देशभक्त, शिक्षाविद् और सामाजिक न्याय के पुरोधा थे।

श्री नड्डा ने कहा कि अगर मैं श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के शिक्षाविद् होने की बात करूं, तो वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के सबसे कम उम्र के कुलपति रहे। श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी बहुआयामी प्रतिभा के धनी एवं एक महान शिक्षाविद् थे और साथ ही देशभक्ति की भावना के कारण उन्होंने राजनीति में कदम रखा था। आज यह कहा जा सकता है कि वर्तमान पंजाब और पश्चिम बंगाल श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के कारण ही भारत का अभिन्न अंग है। भारत के विभाजन के दौरान कांग्रेस नेताओं से समझौते के समय मुस्लिम लीग ने समूचा पंजाब और बंगाल लेने की ठान ली थी, उस समय श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जन–आंदोलन खड़ा कर जनता को जागृत किया था, जिसके कारण पंजाब और बंगाल अखंड भारत का हिस्सा बने।

श्री नड्डा ने कहा कि श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने एक विचारधारा के लिए अपना जीवन खपा दिया। वे सत्ता के लिए राजनीति में नहीं आए थे बल्कि उन्होंने विचारधारा के लिए सत्ता का त्याग कर दिया। श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी बंगाल की सरकार में मंत्री थे, लेकिन विचारधारा के लिए उन्होंने मंत्री पद का भी त्याग कर दिया। इसके अलावा उन्होंने जवाहर लाल नेहरू जी की पहली कैबिनेट में मंत्री रहते हुए नेहरू जी की छद्म धर्मनिरपेक्षता के विरुद्ध प्रखर आवाज उठाई और कहा कि वह मुस्लिम लीग तथा साम्प्रदायिक ताकतों के सामने घुटने टेकने से मत भिन्नता रखते हैं। श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने जम्मू–कश्मीर के मुद्दे पर भी प्रखर आवाज उठाते हुए धारा 370 लगाने का विरोध किया एवं इसके विरोध में श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने नेहरू जी की कैबिनेट से त्याग–पत्र देते हुए नारा दिया कि एक देश में दो निशान, दो विधान और दो प्रधान नहीं चलेंगे और इसी नारे के साथ श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने सत्याग्रह किया। धारा 370 के तहत जम्मू–कश्मीर जाने के लिए परमिट बनाना पड़ता था लेकिन श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने इसका विरोध करते हुए परमिट नहीं लिया और

उन्हें जम्मू–कश्मीर के बॉर्डर पर गिरफ्तार कर लिया गया। श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी की गिरफ्तारी के लगभग एक महीने बाद उनकी जेल में संदेहास्पद स्थिति में उनका देहावसान हो गया। श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी की मां ने तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू से इस घटना की जांच कराने की मांग करते हुए कहा था कि मुझे नेहरू की दलील नहीं, बल्कि अपने बेटे की मौत की जांच चाहिए लेकिन तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने जांच करवाने से इनकार कर दिया।

माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि जिस लड़ाई के लिए श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने बलिदान दिया, भारतीय जनसंघ और बाद में भारतीय जनता पार्टी ने अविरल रूप से उस लड़ाई को आगे बढ़ाया। आदरणीय लोकतंत्र मजबूत होते–होते आज यहां तक पहुंचा है और आज श्री श्यामा प्रसाद मुखर्जी के विचार और कार्य को आगे बढ़ाने के लिए करोड़ों कार्यकर्ता बलिदान देने के लिए तैयार हैं।

श्री नड्डा ने कहा कि भाजपा हर वर्ष इस बलिदान दिवस को मनाती है और इस वर्ष हमने इसे पर्यावरण से भी जोड़ा है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का आह्वान है कि **"एक पेड़ मां के नाम"** कार्यक्रम के अंतर्गत श्री श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस से उनकी जन्म जयंती तक लाखों लोग अपने परिवार के नाम पर पेड़ लगाएंगे। जिस तरह एक मां पूरे परिवार का संरक्षण और पोषण करती है, ठीक उसी प्रकार एक पेड़ सारे समाज को पोषित और संरक्षित करता है। इसलिए भाजपा "एक पेड़ मां के

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 6 अगस्त 2019 को धारा 370 को धराशायी कर दिया और एक देश में "एक निशान, एक विधान और एक प्रधान के नारे को स्थापित किया। श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी की नीतियों को मानने वाले करोड़ों लोगों ने भारतीय जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी की तरफ से इस लड़ाई को आगे बढ़ाया और आज हम इस निर्णायक मोड़ तक पहुंच पाए हैं। उनकी संदेहास्पद मृत्यु की जांच तक नहीं की गई, इसी से पता चलता है कि उस समय देश में कैसा प्रजातंत्र रहा होगा और कांग्रेस के प्रधानमंत्री कैसा बर्ताव किया करते थे?

नाम" कार्यक्रम को आगे बढ़ा रही है। मेरी कार्यकर्ताओं से अपील है कि सभी कार्यकर्ता बागवान या बगीचों में एक पेड़ मां नाम अवश्य लगाएं और पर्यावरण को सहेजने में अपनी भूमिका निभाएं। बलिदान दिवस के अवसर पर श्री नड्डा ने भारतवासियों को शक्ति देने एवं आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को विकसित, आत्मनिर्भर और एक मजबूत भारत के लिए प्रार्थना की। विकसित, आत्मनिर्भर और मजबूत भारत बनना ही श्रद्धेय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

नालंदा विश्वविद्यालय विश्व को भारत के सामर्थ्य का परिचयः मोदी

भारतीय संस्कृति परम्परा को गौरवशाली होने का एहसास कराने वाला विश्व का प्रथम विश्व विद्यालय नालन्दा जिसे विदेशियों ने लूटा, जलावा, लष्ट किया। उसे पुनः पुर्नस्थापित करने का सरकार ने कार्य किया है इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि कार्यक्रम में उपस्थित बिहार के राज्यपाल श्री राजेन्द्र अरलेकर जी, यहां के कर्मठ मुख्यमंत्री श्रीमान नीतीश कुमार जी, हमारे विदेश मंत्री श्री एस जयशंकर जी, विदेश राज्य मंत्री श्री पबित्र जी, विभिन्न देशों के Excellencies, एंबेसडर्स, नालंदा यूनिवर्सिटी के वीसी, प्रोफेसर्स, स्टूडेंट्स और उपस्थित साथियों!

मुझे तीसरे कार्यकाल की शपथ ग्रहण करने के बाद, पहले 10 दिनों में ही नालंदा आने का अवसर मिला है। ये मेरा सौभाग्य तो है ही, मैं इसे भारत की विकास यात्रा के लिए एक शुभ संकेत के रूप में देखता हूं। नालंदा, ये केवल नाम नहीं है। नालंदा एक पहचान है, एक सम्मान है। नालंदा एक मूल्य है, नालंदा मंत्र है, गौरव है, गाथा है। नालंदा है उद्घोष इस सत्य का, कि आग की लपटों में पुस्तकें भले जल जाएं लेकिन आग की लपटें ज्ञान को नहीं मिटा सकतीं। नालंदा के ध्वंस ने भारत को अंधकार से भर दिया था। अब इसकी पुनर्स्थापना भारत के स्वर्णिम युग की शुरुआत करने जा रही है।

अपने प्राचीन अवशेषों के समीप नालंदा का नवजागरण, ये नया कैंपस, विश्व को भारत के सामर्थ्य का परिचय देगा। नालंदा बताएगा– जो राष्ट्र, मजबूत मानवीय मूल्यों पर खड़े होते हैं, वो राष्ट्र इतिहास को पुनर्जीवित करके बेहतर भविष्य की नींव रखना जानते हैं। और साथियों– नालंदा केवल भारत के ही अतीत का पुनर्जागरण नहीं है। इसमें

विश्व के, एशिया के कितने ही देशों की विरासत जुड़ी हुई है। एक यूनिवर्सिटी कैंपस के inauguration में इतने देशों का उपस्थित होना, ये अपने–आप में अभूतपूर्व है। नालंदा यूनिवर्सिटी के पुनर्निर्माण में हमारे साथी देशों की भागीदारी भी रही है। मैं इस अवसर पर भारत के सभी मित्र देशों का, आप सभी का, अभिनंदन करता हूं। मैं बिहार के लोगों को भी बधाई देता हूं। बिहार अपने गौरव को वापस लाने के लिए जिस तरह विकास की राह पर आगे बढ़ रहा है, नालंदा का ये कैंपस उसी की एक प्रेरणा है।

हम सभी जानते हैं कि नालंदा, कभी भारत की परंपरा और पहचान का जीवंत केंद्र हुआ करता था। नालंदा का अर्थ है– **'न अलम् ददाति इति 'नालंदा'** अर्थात्, जहां शिक्षा का, ज्ञान के दान का अविरल प्रवाह हो! शिक्षा को लेकर, एजुकेशन को लेकर, यही भारत की सोच रही है। शिक्षा, सीमाओं से परे है, नफा–नुकसान के नजरिए से भी परे है। शिक्षा ही हमें गढ़ती है, विचार देती है, और उसे आकार देती है। प्राचीन नालंदा में बच्चों का एड्मिशन उनकी पहचान, उनकी nationality को देखकर नहीं होता था। हर देश, हर वर्ग के युवा यहां आते थे। नालंदा विश्वविद्यालय के इस नए कैंपस में हमें उसी प्राचीन व्यवस्था को फिर से आधुनिक रूप में मजबूती देनी है। और मुझे ये देखकर खुशी है कि दुनिया के कई देशों से यहां स्टूडेंट्स आने लगे हैं। यहां नालंदा में 20 से ज्यादा देशों के स्टूडेंट्स पढ़ाई कर रहे हैं। ये वसुधैव कुटुंबकम की भावना का कितना सुंदर प्रतीक है।

मुझे विश्वास है आने वाले समय में नालंदा यूनिवर्सिटी, फिर एक बार हमारे cultural exchange का प्रमुख सेंटर बनेगी। यहां भारत और साउथ ईस्ट एशियन देशों के आर्टवर्क के documentation का काफी काम हो रहा है। यहां Common Archival Resource Centre की स्थापना भी की गई है। नालंदा यूनिवर्सिटी, Asean&India University Network बनाने की दिशा में भी काम कर रही है। इतने कम समय में ही कई लीडिंग ग्लोबल institutes यहां एक साथ आए हैं। एक ऐसे समय में जब 21वीं सदी को एशिया की सदी कहा जा रहा है–हमारे ये साझा प्रयास हमारी साझी प्रगति को नई ऊर्जा देंगे।

भारत में शिक्षा, मानवता के लिए हमारे योगदान का एक माध्यम मानी जाती है। हम सीखते हैं, ताकि अपने ज्ञान से मानवता का भला कर सकें। आप देखिए, अभी दो दिन बाद ही 21 जून को International Yoga Day है। आज भारत में योग की सैकड़ों विधाएं मौजूद हैं। हमारे ऋषियों ने कितना गहन शोध इसके लिए किया होगा! लेकिन, किसी ने योग पर एकाधिकार नहीं बनाया। आज पूरा विश्व योग को अपना रहा है, योग दिवस एक वैश्विक उत्सव बन गया है। हमने अपने आयुर्वेद को भी पूरे विश्व के साथ साझा किया है। आज आयुर्वेद को स्वस्थ जीवन के एक स्रोत के रूप में देखा जा रहा है। Sustainable lifestyle और sustainable development का एक और उदाहरण हमारे सामने है। भारत ने सदियों तक sustainability को एक मॉडल के रूप में जीकर दिखाया है। हम प्रगति और पर्यावरण को एक साथ लेकर चले हैं। अपने उन्हीं अनुभवों के आधार पर भारत ने विश्व को मिशन LIFE जैसा मानवीय विज़न दिया है। आज इंटरनेशनल सोलर अलायंस जैसे मंच सुरक्षित भविष्य की उम्मीद बन रहे हैं। नालंदा यूनिवर्सिटी का ये कैंपस भी इसी भावना को आगे बढ़ाता है। ये देश का पहला ऐसा कैंपस है, जो Net Zero Energy, Net Zero Emissions, Net Zero Water, and Net Zero Waste मॉडल पर काम करेगा। अप्प दीपो भवः

के मंत्र पर चलते हुए ये कैंपस पूरी मानवता को नया रास्ता दिखाएगा।

जब शिक्षा का विकास होता है, तो अर्थव्यवस्था और संस्कृति की जड़ें भी मजबूत होती हैं। हम Developed Countries को देखें, तो ये पाएंगे कि वो इकोनॉमिक और कल्चरल लीडर तब बने, जब वो एजुकेशन लीडर्स हुए। आज दुनिया भर के स्टूडेंट्स और Bright Minds उन देशों में जाकर वहां पढ़ना चाहते हैं। कभी ऐसी ही स्थिति हमारे यहां नालंदा और विक्रमशिला जैसे स्थानों में हुआ करती थीं। इसलिए, ये केवल संयोग नहीं है कि जब भारत शिक्षा में आगे था तब उसका आर्थिक सामर्थ्य भी नई ऊंचाई पर था। ये किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए एक बेसिक रोडमैप है। इसीलिए, 2047 तक विकसित होने के लक्ष्य पर काम कर रहा भारत, इसके लिए अपने एजुकेशन सेक्टर का कायाकल्प कर रहा है। मेरा मिशन है कि भारत दुनिया के लिए शिक्षा और ज्ञान का केंद्र बने। मेरा मिशन है, भारत की पहचान फिर से दुनिया के सबसे Prominent Knowledge centre के रूप में उभरे। और इसके लिए भारत आज बहुत कम उम्र से ही अपने Students को Innovation की Spirit से जोड़ रहा है। आज एक तरफ एक करोड़ से ज्यादा बच्चों को अटल टिंकरिंग लैब्स में Latest Technology के Exposure का लाभ मिल रहा है। वहीं दूसरी ओर चंद्रयान और गगनयान जैसे मिशन Students में Science के प्रति रुचि बढ़ा रहे हैं। Innovation को बढ़ावा देने के लिए भारत ने एक दशक पहले Startup India मिशन की शुरुआत की थी। तब देश में कुछ सौ ही स्टार्ट–अप्स थे। लेकिन आज भारत में 1 लाख 30 हजार से ज्यादा स्टार्ट–अप हैं। पहले की तुलना में आज भारत से रिकॉर्ड पेटेंट फाइल हो रहे हैं, रिसर्च पेपर पब्लिश हो रहे हैं। हमारा जोर अपने Young Innovators को Research और Innovation के लिए ज्यादा से ज्यादा मौके देने का है। इसके लिए सरकार ने 1 लाख करोड़ रुपये का Research Fund बनाने की घोषणा भी की है।

हमारा प्रयास है भारत में दुनिया का सबसे Comprehensive और Complete Skilling System हो, भारत में दुनिया का सबसे advanced research oriented higher education system हो, इन सारे प्रयासों के नतीजे भी दिखाई दे रहे हैं। पिछले कुछ सालों में भारतीय यूनिवर्सिटीज ने ग्लोबल रैंकिंग में पहले से काफी बेहतर चमतवितउ करना शुरू किया है। 10 साल पहले QS ranking में भारत के सिर्फ 9 शिक्षा संस्थान थे। आज इनकी संख्या बढ़कर 46 पहुंच रही है। कुछ दिन पहले ही Times Higher Education Impact रैंकिंग भी आई है। कुछ साल पहले तक इस रैंकिंग में भारत के सिर्फ 13 Institutions थे। अब इस ग्लोबल Impact रैंकिंग में भारत के करीब 100 शिक्षा संस्थान शामिल हैं। पिछले 10 वर्षों में औसतन भारत में हर सप्ताह एक यूनिवर्सिटी बनी है। भारत में हर दिन एक नई ITI की स्थापना हुई है। हर तीसरे दिन एक अटल टिंकरिंग लैब खोली गई है। भारत में हर दिन दो नए कॉलेज बने हैं। आज देश में 23 IITs हैं। 10 साल पहले 13 IIMs थे, आज ये संख्या 21 है। 10 साल पहले की तुलना में आज करीब तीन गुना यानी की 22 एम्स हैं। 10 साल में मेडिकल कॉलेजों की संख्या भी करीब–करीब दोगुनी हो गई है। आज भारत के एजुकेशन सेक्टर में बड़े reforms हो रहे हैं। नेशनल एजुकेशन पॉलिसी ने भारत के युवाओं के सपनों को नया विस्तार दिया है। भारत की यूनिवर्सिटीज ने फ़ॉरेन यूनिवर्सिटीज़ के साथ भी collaborate करना शुरू किया है। इसके अलावा 'डीकन और वलुन्गॉन्ग' जैसी International Universities भी भारत में अपने कैंपस खोल रही हैं। इन सारे प्रयासों से भारतीय छात्रों को

Higher Education के लिए भारत में ही सर्वश्रेष्ठ शिक्षा संस्थान उपलब्ध हो रहे हैं। इससे हमारे मध्यम वर्ग की बचत भी हो रही है।

आज विदेशों में हमारे प्रीमियर इंस्टीट्यूट्स के कैम्पस खुल रहे हैं। इसी साल अबू धाबी में IIT Delhi का कैंपस खुला है। तंजानिया में भी IIT मद्रास का कैंपस शुरू हो चुका है। और ग्लोबल होते भारतीय शिक्षा संस्थानों की तो ये शुरुआत है। अभी तो नालंदा यूनिवर्सिटी जैसे संस्थानों को भी दुनिया के कोने–कोने में जाना है।

आज पूरी दुनिया की दृष्टि भारत पर है, भारत के युवाओं पर है। दुनिया, बुद्ध के इस देश के साथ, मदर ऑफ डेमोक्रेसी के साथ, कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहती है। आप देखिए, जब भारत कहता है– One Earth, One Family, and One Future– तो विश्व उसके साथ खड़ा होता है। जब भारत कहता है– One Sun, One World, One Grid– तो विश्व उसे भविश्य की दिशा मानता है। जब भारत कहता है– One Earth One Health– तो विश्व उसे सम्मान देता है, स्वीकार करता है। नालंदा की ये धरती विश्व बंधुत्व की इस भावना को नया आयाम दे सकती है। इसलिए नालंदा के विद्यार्थियों का दायित्व और ज्यादा बड़ा है। आप भारत और पूरे विश्व का भविष्य हैं। अमृतकाल के ये 25 साल भारत के युवाओं के लिए बहुत अहम हैं। ये 25 वर्ष नालंदा विश्वविद्यालय के हर छात्र के लिए भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। यहां से निकलकर आप जिस भी क्षेत्र में जाएं, आप पर अपनी यूनिवर्सिटी के मानवीय मूल्यों की मुहर दिखनी चाहिए। आपका जो स्वहव है, उसका संदेश हमेशा याद रखिएगा। आप लोग इसे Nalanda Way कहते हैं ना? व्यक्ति का व्यक्ति के साथ सामंजस्य, व्यक्ति का प्रकृति के साथ सामंजस्य, आपके स्वहव का आधार है। आप अपने शिक्षकों से सीखिए, लेकिन इसके साथ ही एक दूसरे से सीखने की भी कोशिश करिए। Be Curious, Be Courageous and Above all Be Kind- अपनी नॉलेज को समाज में एक सकारात्मक बदलाव के लिए प्रयोग करिए। अपनी नॉलेज से बेहतर भविष्य का निर्माण करिए। नालंदा का गौरव, हमारे भारत का गौरव, आपकी सफलता से तय होगा। मुझे विश्वास है, आपके ज्ञान से पूरी मानवता को दिशा मिलेगी। मुझे विश्वास है हमारे युवा आने वाले समय में पूरे विश्व को नेतृत्व देंगे, मुझे विश्वास है, नालंदा global cause का एक महत्वपूर्ण सेंटर बनेगा।

आज पूरी दुनिया की दृष्टि भारत पर है, भारत के युवाओं पर है। दुनिया, बुद्ध के इस देश के साथ, मदर ऑफ डेमोक्रेसी के साथ, कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहती है।

इसी कामना के साथ, आप सभी का मैं हृदय से बहुत–बहुत धन्यवाद करता हूं। और नीतीश जी ने सरकार की तरफ से पूरी मदद का जो आह्वान किया है, उसका मैं स्वागत करता हूं। भारत सरकार भी इस विचार यात्रा को जितनी ऊर्जा दे सकती है उसमें कभी भी पीछे नहीं रहेगी।

लोकतंत्र का "कालादिन"

तरुण चुघ

भारत संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। विडंबना रही कि भारत को सदियों तक शासकीय प्रताड़ना झेलनी पड़ी। मुगलों के शासन में धार्मिक आधार पर लोगों को प्रताड़ित किया जाता रहा है तो अंग्रेजों के शासन में शोषण के जरिए जनता प्रताड़ित होती रही। देश अंग्रेजी दासता से मुक्त हुआ तो यह उम्मीद जगी कि भारत अब प्रताड़ना के दंश से मुक्त हुआ। लेकिन, देश के आजाद होने के लगभग दो दशक बाद 1975 से 1977 तक जनता को ऐसी प्रताड़ना झेलनी पड़ी, जो प्रताड़ना की पराकाष्ठा थी। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के इतिहास का वह एक काला अध्याय था। 25 जून 1975 से 21मार्च 1977 तक 21 महीने की अवधि में भारत

प्रताड़ना की दौर में रहा। स्वतंत्र भारत के इतिहास का यह सबसे अलोकतांत्रिक, असंवैधानिक एवं राजनीतिक अत्याचार का काल था। देश में सभी चुनाव स्थगित हो गए तथा नागरिक अधिकारों को समाप्त कर दिया गया। मानवाधिकारों को कुचल दिया गया। तत्कालीन कांग्रेसी प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के राजनीतिक विरोधियों को जेल में डाल दिया गया। अभिव्यक्ति की आजादी समाप्त कर दी गई, प्रेस की स्वतंत्रता समाप्त कर उसको भी प्रतिबंधित कर दिया गया। कोई भी समाचार पत्र सरकार की अनुमति के बिना कुछ भी प्रकाशित नहीं कर सकते थे। चार न्यूज एजेंसियों को एक कर उसे सरकारी नियंत्रण में ले लिया गया था। लगभग चार हजार अखबारों को जब्त कर दिया गया तथा 327 पत्रकारों को मीसा के तहत गिरफ्तार कर लिया गया। ढ़ाई सौ अख़बारों का विज्ञापन बंद कर दिया गया तथा सात विदेशी पत्रकारों को देश से निकल दिया गया। दर्जन भर विदेशी पत्रकारों के भारत में प्रवेश पर पाबंदी लगा दी गई तो कई को भारत से बाहर निकाल दिया गया। ऐसी अलोकतांत्रिक कार्रवाई करने वाली कांग्रेस पार्टी आज संविधान और अभिव्यक्ति की आजादी की बात करती है तो हास्यास्पद लगती है।

सरकार के अलोकतांत्रिक गतिविधियों का विरोध करने के लिए राष्ट्रवादी संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को प्रतिबंधित कर स्वयंसेवकों को यातनाएं दी गई। पुलिस इस संगठन पर क्रूरता के साथ टूट पड़ी थी। उसके हजारों कार्यकर्ताओं को जेल में डाल दिया गया। लाखों स्वयंसेवकों ने प्रतिबंध और मौलिक अधिकारों के हनन के खिलाफ शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक तरीके से आंदोलन में भाग लिया।

कांग्रेस सरकार की तानाशाही ऐसी थी कि सभी विपक्षी दलों के नेताओं और सरकार के आलोचकों के गिरफ्तार करने और सलाखों के पीछे भेजने के बाद पूरा देश अचंभित होने की स्थिति में आ गया था। लोकनायक जयप्रकाश नारायण, मोरारजी देसाई, अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी, जननायक कर्पूरी ठाकुर समेत विपक्ष के तमाम नेताओं को गिरफ्तार कर लिया

गया।

आपातकाल की घोषणा के बाद पंजाब में विरोध मुखर हुआ।सिख नेतृत्व ने भी कांग्रेस के इस करतूत का विरोध किया। अमृतसर में बैठकों का आयोजन किया, जहां उन्होंने "कांग्रेस की फासीवादी प्रवृत्ति" का विरोध करने का संकल्प किया। इस तरह देश के सभी राज्यों में केंद्र सरकार की तानाशाही के खिलाफ आंदोलन मुखर होता गया। राज्य की विधानसभाओं से विपक्षी विधायकों ने इस्तीफा देना शुरू किया।

1971 के लोकसभा चुनाव में इंदिरा गांधी की जीत को इलाहाबाद हाईकोर्ट में दी गई चुनौती के बाद से देश में राजनीतिक उथल पुथल का दौर शुरू हुआ। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अपने फैसले में माना कि इंदिरा गांधी ने सरकारी मशीनरी और संसाधनों का दुरुपयोग किया। इसलिए जन प्रतिनिधित्व कानून के अनुसार उनका सांसद चुना जाना अवैध करार देकर छह साल तक उनके कोई भी चुनाव लड़ने पर रोक लगा दी गई। ऐसी स्थिति में इंदिरा गांधी के पास प्रधानमंत्री पद छोड़ने के सिवा कोई दूसरा रास्ता नहीं था। अदालत ने कांग्रेस पार्टी को नया प्रधानमंत्री बनाने के लिए तीन हफ्तों का समय दिया था। इस समय देश में 'इंडिया इज इंदिरा, इंदिरा इज इंडिया' का माहौल बना दिया गया था। ऐसे माहौल में इंदिरा के होते किसी और को प्रधानमंत्री कैसे बनाया जा सकता था? इंदिरा गांधी अपनी ही पार्टी में किसी पर भी विश्वास नहीं करती थीं। उन्होंने तय किया कि वे इस्तीफा देने के बजाय 3 हफ़्तों की मिली मोहलत का फायदा उठाते हुए इस फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी। सुप्रीम कोर्ट ने भी हाई कोर्ट के फैसले पर पूर्ण रोक लगाने से इंकार कर दिया। बिहार और गुजरात में कांग्रेस के खिलाफ छात्रों का आन्दोलन उग्र हो रहा था। बिहार में इस आन्दोलन का नेतृत्व लोकनायक जयप्रकाश नारायण कर रहे थे। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के अगले दिन यानी 25 जून को दिल्ली के रामलीला मैदान में जयप्रकाश नारायण की रैली थी। उन्होंने इंदिरा गांधी पर देश में लोकतंत्र का गला घोंटने का आरोप लगाया और रामधारी सिंह दिनकर की एक कविता के अंश 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है' का नारा बुलंद किया था। लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने विद्यार्थियों, सैनिकों, और पुलिस वालों से अपील कि वे लोग इस दमनकारी निरंकुश सरकार के आदेशों को ना मानें, क्योंकि कोर्ट ने इंदिरा को प्रधानमन्त्री पद से हटने को बोल दिया है। महज इसी रैली के आधार पर इंदिरा गांधी ने आपातकाल लगाने का फैसला किया था। इंदिरा गांधी के खिलाफ पूरे देश में जन आक्रोश बढ़ रहा था। इसमें छात्र और सम्पूर्ण विपक्ष एकजुट हो गए थे।

इंदिरा गांधी को आपातकाल लगाने का सबसे बड़ा बहाना जयप्रकाश नारायण द्वारा बुलाया गया असहयोग आन्दोलन था। इसी आधार पर 26 जून 1975 की सुबह राष्ट्र के नाम अपने संदेश में इंदिरा गांधी ने कहा कि जिस तरह का माहौल देश में एक व्यक्ति अर्थात जयप्रकाश नारायण द्वारा बनाया गया है, उसमें यह जरूरी हो गया है कि देश में आपातकाल लगाया जाए। इसके साथ ही तत्कालीन भारतीय संविधान की धारा 352 के तहत आपातकाल की घोषणा कर दी गई।

आपातकाल लागू होने के साथ ही विरोध की लहर और तेज़ होती रही। अंततः प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने लोकसभा भंग कर चुनाव कराने की सिफारिश कर दी। चुनाव में आपातकाल लागू करने का फ़ैसला जनता को नागबार लगा। इस अत्याचार का विरोध की अगुवाई करने वाले लोकनायक जय प्रकाश नारायण ने इसे 'भारतीय इतिहास की सर्वाधिक काली अवधि' कहा था।

1977 में हुए लोकसभा चुनाव में खुद इंदिरा गांधी अपने गढ़ रायबरेली से चुनाव हार गईं। जनता पार्टी भारी बहुमत से सत्ता में आई और मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने। आजादी के 30 वर्षों के बाद केंद्र में किसी ग़ैर कांग्रेसी सरकार का गठन हुआ। कांग्रेस को उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, हरियाणा और दिल्ली में एक भी सीट नहीं मिली। इस नई सरकार में जननेता अटल बिहारी वाजपेयी ने विदेश मंत्री के रूप में दुनिया के सामने भारत की जो तस्वीर पेश की, उसे आज भी लोग याद कर रहे हैं। अटलजी ने पहली बार संयुक्त राष्ट्र में हिंदी में अपना भाषण देकर दुनिया को भारत की भाषा की महत्ता समझाई। सूचना व प्रसारण मंत्री के रूप में लालकृष्ण आडवाणी ने सरकारी संचार माध्यमों को स्वायत्तता प्रदान कर लोकतंत्र को मजबूती प्रदान की। देश में लगाए गए आपातकाल को भारत के राजनीतिक इतिहास की एक कलंक कथा के रूप में याद की जाती है। जेल में कैद के दौरान भारत रत्न अटलबिहारी वाजपेयी की कविताओं में उस समय की स्थिति का आकलन है :–

अनुशासन के नाम पर, अनुशासन का खून
भंग कर दिया संघ को, कैसा चढ़ा जुनून
कैसा चढ़ा जुनून, मातृपूजा प्रतिबंधित
कुलटा करती केशव–कुल की कीर्ति कलंकित
यह कैदी कविराय तोड़ कानूनी कारा
गूंजेगा भारत माता की जय का नारा।

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री हैं)

बौद्धिक विकास का उपकरण संवाद

हृदयनारायण दीक्षित

मानवीय जीवन मूल्यों पर संकट है। इतिहास के किसी अन्य कालखण्ड में इस तरह का मानवीय संकट नहीं था। समाचार माध्यम भी जब कब विश्व युद्ध की आशंका की बातें करते हैं। विचार ही मनुष्य जाति के वाह्य स्वरूप और आंतरिक उदात्त भाव के प्रसारक रहे हैं। विचार भी अपना प्रभाव खो रहे हैं। मानवीय सभ्यता आधुनिक काल का मनुष्य विरोधी प्रेरक तत्व बन गई है। वातावरण में निश्चिन्तता नहीं है। संदेह और अनिश्चितता का वातावरण है। मनुष्य जाति भविष्य के भय से डरी हुई है। धन का प्रभाव और धन का अभाव दोनों ही मारक हैं। मानवता का बड़ा भाग पर्याप्त भोजन से वंचित है। इस वर्ग में सामान्य चिकित्सा और शिक्षा, आश्रय–घर का अभाव है। आधुनिक सभ्यता के प्रभाव में अभावग्रस्त लोगों के सामने संकट है। विज्ञान के जानकार प्रकृति के तमाम रहस्य बता रहे हैं। निसंदेह वैज्ञानिक शोधों ने चिकित्सा के क्षेत्र में क्रांतिकारी उपलब्धियां हासिल की हैं। लेकिन आधुनिक वैज्ञानिक शोधों ने पृथ्वी ग्रह के अस्तित्व के समाप्त होने का खतरा पैदा कर दिया है।

युद्ध के तमाम आश्चर्यजनक हथियार पृथ्वी और मानव जाति के अस्तित्व के लिए खतरा बन गए हैं। परमाणु हथियार सहित अनेक आश्चर्यजनक अस्त्रों की खोजों से पृथ्वी के ही अस्तित्व पर खतरा है। पृथ्वी ग्रह संकट में है और उससे पोषण पाने वाली मानव जाति भी संकट में है। वैज्ञानिकों ने तमाम ग्रहों की गतिविधि का पता लगा लिया है। आशंका है कि किसी समय पृथ्वी चन्द्रमा के निकट पहुंच सकती है। सूर्य का ईंधन लाखों वर्ष से खर्च हो रहा है। सूर्य के ठंडा हो जाने से ही मनुष्य जाति नष्ट हो सकती है। हम इन्हें भविष्य की आशंकाएं कह सकते हैं। डॉक्टर राधाकृष्णन ने 'धर्म और समाज' में 'धर्म की आवश्यकता' शीर्षक में कहा है, ''अधिक सम्भावना इस बात की है कि मानव जाति स्वयं जानबूझकर किए गए कार्यों से, अपनी मूर्खता और स्वार्थ के कारण नष्ट हो सकती है। संसार आनंद के लिए है। हम युद्ध यंत्र जात की पूर्णतः तक पहुंचने में लगाई जा रही ऊर्जाओं के केवल थोड़े से हिस्से का ही इसके लिए प्रयोग करें तो सबको आनंदमय बनाया जा सकता है।''

सम्पूर्ण मानवता विषाद ग्रस्त जान पड़ रही है। आदर्श परम्पराएं, स्वतः प्रेरित अनुशासन और राष्ट्र राज्यों द्वारा स्थापित विधि व्यवस्था शिथिल हो रही हैं। डार्विन ने लिखा है, ''मनुष्य जीवन सभ्यता में उन्नति करता जा रहा है। छोटे वर्ग समूह बड़े समुदायों में संगठित होते जाते हैं। त्यों त्यों व्यक्ति को यह बात समझ में आती जाती है कि उसे अपनी सामाजिक सहज प्रवृत्तियों और संवेदनाओं का विस्तार अपने राष्ट्र के लिए कर लेना चाहिए।''

सभ्यता आखिरकार क्या है? मनुष्य के बौद्धिक विकास का सबसे बड़ा उपकरण संवाद है और संवाद की प्रारंभिक शर्त है प्रेम पूर्ण भाषा और वाणी। वैदिक काल में संवाद की अनेक संस्थाएं थी। सभा और समितियां विचार विमर्श का मंच थी। सभा में विचार रखने वाले सभेय कहे जाते थे। इसी से शब्द बना है सभासद। सभा में प्रेमपूर्ण ढंग से अपनी बात रखने वाले व्यक्ति को सभ्य कहा जाता था। किसी समूह का शब्द आचरण और सौन्दर्यबोध सभ्यता है लेकिन प्रेमपूर्ण संवाद घटा है।

प्रकृति और मनुष्य के मध्य परस्परावलंबन है। मनुष्य प्रकृति का भाग है। हमारे और प्रकृति के मध्य आत्मीयता होनी चाहिए। प्रकृति की सभी शक्तियों के लिए चित्त में आत्मीय भाव के साथ आदर भाव की भी आवश्यकता है। लेकिन प्रकृति और मनुष्य के बीच अंतर्विरोध भी हैं।

प्रकृति और मनुष्य के मध्य परस्परावलंबन है। मनुष्य प्रकृति का भाग है। हमारे और प्रकृति के मध्य आत्मीयता होनी

चाहिए। प्रकृति की सभी शक्तियों के लिए चित्त में आत्मीय भाव के साथ आदर भाव की भी आवश्यकता है। लेकिन प्रकृति और मनुष्य के बीच अंतर्विरोध भी हैं। आंधी, तूफान और ऐसी ही तमाम प्राकृतिक आपदाएं मनुष्य को व्यथा देती हैं और जीवन के लिए खतरा भी बनती हैं। ऐसी घटनाओं को प्राकृतिक मानकर अपना जीवनयापन करने की बात सही है। लेकिन अनेक संकट आधुनिक सभ्यता ने भी पैदा किए हैं। भूमण्डलीय ताप, भूगर्भ जल स्तर का गिरना, वायु प्रदूषण आदि आपदाएं उपभोक्तावादी आचरण से पैदा होती हैं।

सी० बी० जुंग ने अपनी पुस्तक 'मॉडर्न मैन इन सर्च ऑफ अ सोउल' में लिखा है, ''आधुनिक सभ्यता और मनुष्य उन्नति की चरम सीमा पर है। भविष्य में लोग उससे भी आगे निकल जाएंगे।'' यह बात ठीक है कि वह एक युगव्यापी विकास का अंतिम परिणाम है। लेकिन साथ ही यह मानव जाति की आशाओं की दृष्टि से अधिकतम निराशाजनक भी है। आधुनिक मनुष्य को इसकी जानकारी भी है। उसने देख लिया है कि विज्ञान, शिल्प और संगठन कितने लाभकारी हैं और वे कितने विनाशकारी हो सकते हैं। ईसाई चर्च, मनुष्यों का भाईचारा, अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक संगठन और आर्थिक हितों की एकता सब के सब खोटे सिद्ध हुए हैं। मनोविज्ञान की भाषा में कहें तो लगभग प्राणान्तक आघात पहुंचा है। परिणामस्वरुप मनुष्य अनिश्चितता में जी रहा है।

परिदृश्य चिन्ताजनक है। मनुष्य की वाह्य समृद्धि बढ़ी है। मनुष्य यंत्र हो रहा है। उसकी आत्मा खो गई है। वह खोई हुई आत्मा की पुनः प्राप्ति का प्रयास नहीं कर रहा है। भारत की प्राचीन सभ्यता में तमाम भौतिक अभावों के बावजूद मनुष्य आनंदित था। राष्ट्र के प्रति उसकी निष्ठा थी। सभी रिश्तों में आत्मीयता थी। मनुष्य में मनुष्येत्तर प्राणियों और सम्पूर्ण जगत् के प्रति भी आत्मभाव था। भारत के मनुष्य की दृष्टि और जीवन की गतिविधि सामूहिक थी। सुख दुख सामूहिक थे। पर्व उत्सव सामूहिक उत्सव आनंद का स्रोत थे। परिवार आनंद मठ था। यत्र तत्र सर्वत्र आनंद था। आधुनिक सभ्यता के प्रभाव में जीवन का आनंद रस सूख गया है। आधुनिक सभ्यता द्वारा मनुष्य को नितांत व्यक्तिवादी और मशीन बनाया है।

वैदिक सभ्यता और संस्कृति में सम्पूर्ण विश्व को परिवार जाना गया है। वसुधैव कुटुम्बकम वैदिक संस्कृति का लोकप्रिय सूत्र है। विश्व के अणु और परमाणु के प्रति श्रद्धा और आदरभाव रहा है। शांति मानवता की प्यास है। वैदिक साहित्य में शांति को जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया गया है। भारतीय समाज के चिन्तकों, विद्वानों और वैदिक काल के ऋषियों ने शांति की उपासना की है। ऋग्वेद में विश्व शांति की प्रार्थना है। यह भारतवासियों की शांति की प्यास को सुंदर अभिव्यक्ति देती है। शांति मन्त्र में कहते हैं, ''अंतरिक्ष शांत हों। पृथ्वी शांत हों। आकाश शांत हों। वनस्पतियां औषधियां शांत हों। शांति भी शांत हों।'' यहाँ केवल मनुष्यों के बीच परस्पर सद्भाव वाली शांति की ही बात नहीं है। यहाँ पृथ्वी से लेकर आकाश तक शांति स्थापित होने की प्रार्थना है। शांति अशांति की अनुपस्थिति नहीं है। शांति मौलिक रूप में मानव मन की प्राकृतिक प्यास है। अशांत चित्त से सृजन संभव नहीं होते। अशांत चित्त विध्वंसक होता है और शांत चित्त सर्जक।

विश्व तनाव में है। हिन्दुत्व परिपूर्ण जीवन दृष्टि है। पूरी जीवन दृष्टि आतंरिक आत्मीयता के आधार पर विकसित हुई है। धरती माता है। आकाश पिता है। जल माताएं हैं। जल से जीवन का उद्‌भव ऋग्वेद में उल्लिखित है। जलमाताओं ने ही संसार को जन्म दिया। नदियां माताएं हैं। सूर्य संरक्षक हैं। परोपकार और सदाचार उत्कृष्ट जीवन मूल्य हैं। दुख और वैराग्य के स्थान पर आनंद और प्रवृत्ति हैं। संसार त्याज्य नहीं है। संसार धर्म क्षेत्र, कर्म क्षेत्र है। जीवन कर्म प्रधान है। जीवन में पलायन का कोई भाव नहीं। वनस्पतियां भी प्रणाम के योग्य हैं। उन्हें देवता कहा गया है। वैदिक सभ्यता में विचार विविधता है। जीवन और जगत् को समझने के लिए पूर्व मीमांसा, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, बुद्ध और जैन 8 दर्शन हैं। भारतीय दर्शन किसी देवदूत की घोषणा नहीं है। आधुनिक सभ्यता की सभी विसंगतियों के उपचार हिन्दुत्व में हैं।

बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के लिए प्रतिबद्ध है योगी सरकार

डॉ. सौरभ मालवीय

उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ की सरकार प्रदेशवासियों के स्वास्थ्य के प्रति अत्यंत गंभीर है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ चाहते हैं कि प्रदेश का प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ रहे। इसलिए सरकार स्वास्थ्य सुविधाओं को निरंतर बेहतर बनाने के लिए प्रयासरत है। योगी सरकार ने वित्तीय वर्ष 2024–2025 में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण की योजनाओं के लिए 27,086 करोड़ रुपये की व्यवस्था की है। प्रदेश में आयुष्मान आरोग्य मंदिरों के साथ–साथ स्वास्थ्य उपकेंद्र खोले जाएंगे। इसके साथ ही राज्य में एकीकृत सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयोगशालाएं भी खोली जाएंगी। ये विभिन्न संचारी एवं गैर–संचारी रोगों के लिए नैदानिक सुविधाएं भी प्रदान करेंगी। इनमें शय रोग, एचआईवी, मलेरिया, जल जनित रोग एवं हेपेटाइटिस आदि के लिए विभिन्न राष्ट्रीय कार्यक्रमों के अंतर्गत परिकल्पित परीक्षण सम्मिलित हैं। इससे क्षेत्र के लोगों को बहुत लाभ होगा। उन्हें जांच आदि के लिए भटकना नहीं पड़ेगा।

राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन

प्रायः देखा जाता है कि गांवों की अपेक्षा शहरों में पर्याप्त चिकित्सीय सुविधाएं उपलब्ध रहती हैं। इसलिए योगी सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त चिकित्सीय सुविधाएं उपलब्ध कराने पर विशेष बल दे रही है। इसके दृष्टिगत योगी सरकार ने राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों के संचालन के लिए वित्तीय वर्ष 2024–2025 में 7350 करोड़ रुपये की व्यवस्था की है। प्रधानमंत्री आयुष्मान स्वास्थ्य योजना के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं पर 952 करोड़ रुपये व्यय किए जाएंगे। इससे ग्रामीणों को अपने ही क्षेत्र में समुचित उपचार उपलब्ध होगा। आपातकाल की स्थिति में उन्हें रोगी को लेकर शहर की ओर दौड़ना नहीं पड़ेगा। रोगी को समय पर उपचार उपलब्ध हो सकेगा। साथ ही उनका समय एवं धनराशि की भी बचत होगी।

मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना

योगी सरकार ने मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना के अंतर्गत में वित्तीय वर्ष 2024–2025 में 300 करोड़ रुपये की व्यवस्था की है। इस योजना में उन परिवारों को सम्मिलित किया जाता है, जो प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के अंतर्गत स्वास्थ्य बीमा प्राप्त करने से वंचित रह गए हैं। इस योजना के अंतर्गत प्रदेश के नागरिकों को पांच लाख रूपए तक का स्वास्थ्य बीमा प्रदान किया जाएगा। इसके माध्यम से वे निःशुल्क अपना उपचार सरकारी या निजी अस्पताल में करवा सकेंगे। इस योजना का शुभारंभ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा 1 मार्च 2019 को किया गया था। इस योजना के माध्यम से प्रदेश के लगभग 10 करोड़ परिवारों को लाभान्वित किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना

योगी सरकार ने वित्तीय वर्ष 2024–2025 में प्रदेश में प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के लिए 322 करोड़ रुपये की व्यवस्था की है। इस योजना के अंतर्गत गर्भवती एवं स्तनपान कराने वाली महिलाओं को नकद प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाती है।

वास्तव में महिलाएं अपने स्वास्थ्य पर तनिक भी ध्यान नहीं देती हैं। इसलिए स्वास्थ्य एवं पोषण के संबंध में उनकी स्थिति संतोषजनक नहीं है। गर्भावस्था एवं स्तनपान कराने वाली महिलाओं को पौष्टिक आहार की अत्यधिक आवश्यकता होती है। महिला के साथ–साथ उसके गर्भस्थ एवं जन्मे शिशु के लिए भी पौष्टिक आहार आवश्यक है। यदि माँ स्वस्थ होगी, तो उसका शिशु भी स्वस्थ होगा। एक कुपोषित महिला का शिशु भी कुपोषण का शिकार हो जाता है। इस कुपोषण का प्रारंभ गर्भाशय से ही आरंभ हो जाता है। इसका दुष्प्रभाव महिला के साथ–साथ उसके बच्चे पर भी पड़ता है। आर्थिक एवं सामाजिक दबाव के कारण बहुत सी महिलालाएं गर्भावस्था के अंतिम समय तक परिवार के लिए परिश्रम करती हैं। वे घर में ही नहीं, अपितु घर से बाहर जाकर भी परिशम करती हैं। अत्यधिक परिश्रम के कारण उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए सरकार ने ऐसी महिलाओं के लिए यह योजना प्रारंभ की है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय राज्य कर्मचारी कैशलेस चिकित्सा योजना

योगी सरकार सेवानिवृत कर्माचारियों के लिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय राज्य कर्मचारी कैशलेस चिकित्सा योजना संचालित कर रही है। वित्तीय वर्ष 2024–2025 में इस योजना के लिए 150 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है। यह योजना योगी सरकार द्वारा 21 जुलाई 2022 को प्रारंभ की गई थी। इसका उद्देश्य राज्य के सभी कर्मचारियों एवं उनके आश्रितों को समुचित स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना है। इस योजना के अंतर्गत राज्य के कर्मचारियों को सरकार द्वारा एक स्वास्थ्य कार्ड जारी किया जाता है। इसके माध्यम से वे अपना एवं अपने परिवार का अस्पताल में निःशुल्क उपचार करवा सकते हैं। उपचार का सारा खर्च राज्य सरकार द्वारा वहन किया जाता है।

उल्लेखनीय है कि योगी सरकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चुनाव क्षेत्र वाराणसी पर विशेष ध्यान दे रही है। सरकार ने यहां नए राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय खोलने का निर्णय लिया है। चिकित्सा महाविद्यालय की स्थापना पांडेयपुर स्थित मानसिक अस्पताल के परिसर में की जाएगी। लगभग 17 एकड़ भूमि में बनने वाले इस महाविद्यालय के निर्माण पर 12 सौ करोड़ रुपए की लागत आने का अनुमान है। इसके लिए सरकार ने अभी 400 करोड़ रुपए की व्यवस्था की है। इसमें एमबीबीएस की 100 सीटें होंगी, जिन्हें बाद में बढ़ाया भी जा सकता है।

योगी सरकार ने असाध्य रोगों के निःशुल्क उपचार के लिए 125 करोड़ रुपए की व्यवस्था की है। वित्तीय वर्ष 2023–2024 के लिए 100 करोड़ रुपए निर्धारित किए गए थे। राजकीय महाविद्यालयों के ट्रामा सेंटरों को अपग्रेड किया जाएगा। इसमें 100 बेड के साथ–साथ 200 बेड के एपेक्स ट्रामा सेंटर भी सम्मिलित होंगे। इसके अतिरिक्त वाराणसी में राजकीय होम्योपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय तथा अयोध्या में राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सा महाविद्यालय की स्थापना का भी निर्णय लिया गया है।

प्रधानमंत्री आयुष्मान स्वास्थ्य योजना

प्रधानमंत्री आयुष्मान स्वास्थ्य योजना के अंतर्गत प्रदेश में 1600 स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र खोले जाएंगे। इसके अतिरिक्त 1035 राजकीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी चिकित्सालयों को स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र में परिवर्तित किया जाएगा। इसके साथ ही प्रदेश के 21675 उपकेंद्रों को प्रधानमंत्री आयुष्मान स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र में परिवर्तित किया जाएगा। इन सबको टेली मेडिसिन से जोड़ा जाएगा। इसके माध्यम से रोगियों को उपचार संबंधी सुझाव दिए जाएंगे। जिन गंभीर रोगों का उपचार स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र पर उपलब्ध नहीं होगा, उन रोगियों को टेली मेडिसिन के माध्यम से विशेषज्ञ चिकित्सकों के सुझाव उपलब्ध करवाए जाएंगे। उन्हें निःशुल्क दवाएं भी प्रदान की जाएंगी। उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक के अनुसार प्रदेश के 18 हजार स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्रों पर कम्युनिटी हेल्थ ऑफिसर की नियुक्ति की गई है। शेष केन्द्रों में भी शीघ्र ही नियुक्तियां की जाएंगी।

उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश पांच करोड़ आयुष्मान कार्ड जारी करने वाला देश का प्रथम राज्य बन गया है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार योगी सरकार ने 50,017,920 आयुष्मान कार्ड जारी किए हैं तथा 74,382,304 लोगों को लाभान्वित किया है। इस योजना में प्रदेश के 3716 अस्पताल सम्मिलित हैं। इस योजना के अंतर्गत कुल 3,481,252 स्वास्थ्य दावे दायर किए गए थे। इनमें से प्रदेश में 92 ।48 प्रतिशत की निपटान दर के साथ 3,275,737 दावों का निपटान कर दिया गया है।

निःसंदेह योगी सरकार प्रदेशवासियों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाने के लिए प्रतिबद्ध है।

विस्तारक बैठक

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91, शीर्षक कोडः UPHIN16701, डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2024-26
जून द्वितीय अंक 2024 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 26–28 (द्वितीय पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।